अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : 52 अंक : 5 वैशाख-ज्येष्ठ वि.सं. 2082 मई, 2025 पृष्ठ-28 RNI **43602/77** ISSN No.**2581-98**1x

अज़ीम शायर शीन काफ़ निज़ाम पद्मश्री से अलंकृत

भगवान बुद्ध की पांचवी शताब्दी की प्रतिमा से दमकते राष्ट्रपति भवन के भव्य गणतंत्र मंडप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अज़ीम शायर तथा राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के सदस्य शीन काफ़ निज़ाम को उनके साहित्य तथा शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 'पद्मश्री' से अलंकृत किया।

गत 28 अप्रेल को प्रदान किये गये अलंकरण में उनके लिए कहा गया है कि वे ख्यातनाम उर्दू कवि, आलोचक और साहित्यिक विद्वान है तथा उनकी शायरी में अरबी, फ़ारसी, हिंदी और संस्कृत परंपरा का मेल मिलता है।

राष्ट्रपति ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच निज़ाम साहब के सीने पर 'पद्मश्री' का मैडल टांगा और उन्हें इस नागरिक अलंकरण की सनद प्रदान की।

काले जूते सफेद पायजामे, पर क्रीम रंग के चोले तथा उस पर सफेद जाकेट और गले में दुपट्टा डाले 78 वर्षीय निज़ाम साहब ने यह अलंकरण गरिमा से स्वीकार किया।

देश विदेश नें आधुनिक उर्दू शायरी के सिरमोर माने जाने वाले निज़ाम साहब का अदीबों की दुनिया में अपना अलग रुतबा है, किन्तु वे अपने शहर जोधपुर में अपनों के साथ ठेठ मारवाड़ी में बतियाते हुए दिख जाते हैं।

उनके लिए अज्ञेय ने उनके लिए कहा था "सीधा-साधा मानवीय सत्य कितना बड़ा चमत्कार होता है, यह वह जानते हैं। और उसी को अपने भीतर से पाना, उसी को दूसरे के भीतर उतार देना उनका अभीष्ट है।" मक़बूल शायर गुलज़ार कहते हैं "कई सराब (मृगतृष्णा) मिले रास्ते में और एक सराब में पानी से भरी झील मिली, उसका नाम है निज़ाम।"

अहिंसार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम ।
यः स्वादहिंसासम्पृक्तः स धर्म इति निश्चयः ।।

– महाभारत, शांतिपर्व 109.12

धर्म की सभी बातें सभी जीवों को हिंसा से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से हैं, अहिंसा। इसलिए, जिसमें हिंसा न करने का लक्षण है, वह धर्म है। यह निश्चित है।

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा–चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : 52 अंक :5 वैशाख–ज्येष्ठ वि.सं. 2082 मई, 2025 मूल्य : पचास रुपये

क्र म

वाणी

3. महाभारत की सीख

संपादकीय

5. सब साथ चलें और कलह न करें...

लेख

7. कोई झूठ को सच का आईना तो दिखाए
– वेदव्यास

10. विश्वविद्यालय की डिग्री हमेशा सफलता की कुंजी नहीं होती **– मारिया पेट्राकिस**

12. एआई की चुनौती और कक्षा में रचनात्मकता
– अम्मेल शेरोन

सीख

14. धरती का रहस्य **– गौहर रज़ा**

लेख

16. रेत समाधि : उपन्यास या गांधी से माफ़ी...
– डॉ. अरविंद कुमार पुरोहित

18. **टिप्पणी**
आधुनिक पुरुषत्व का विरोधाभास!
– संतोष देसाई

21. बुरा नारीवादी होना इतना बुरा भी नहीं!
– रोक्सेन गे

बात–चीत

23. प्रकृति के नियमों को अलौकिक बनाने की कोशिश न करें! **– गेरार्ड' टी हूफ़्ट**

स्मृति शेष

26. डॉ. जलालुद्दीन, पोप फ्रांसिस

27. मोहियुद्दीन

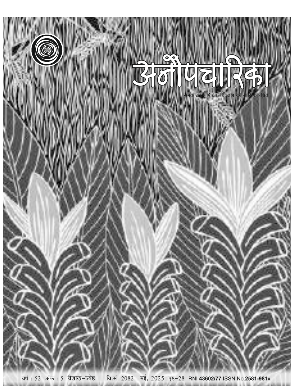

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई–मेल : raeajaipur@gmail.com
www.raea.in

संरक्षक :
श्रीमती आशा बोथरा
संपादक :
राजेन्द्र बोड़ा
प्रबंध संपादक :
दिलीप शर्मा

संपादकीय

सब साथ चलें और कलह न करें इसे मानने को बहुत लोग तैयार नहीं

ॐ सहनाववतु, सहनौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषा वहै।

इस मंत्र का अर्थ है विश्व में हम सब साथ चलें, साथ बोलें, और साथ मिल कर वीरोचित कार्य करें। अच्छा ज्ञान प्राप्त कर तेजस्वी बनें, हमारे बीच विद्वेष (कलह) न हो। ज्ञान की यह हमारी सनातन परंपरा है। आश्चर्य होता है कि इसके बावजूद हम भारतीय लोग इतनी आसानी से शत्रुतापूर्ण समूहों में क्यों विभाजित हो जाते हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी धार्मिकता निश्चित है।

बहुत से लोग मानते हैं कि मानव जीवन के दो सबसे महत्वपूर्ण, कष्टप्रद और विभाजनकारी विषय हैं – राजनीति और धर्म। राजनीति और धर्म दोनों हमारे अंतर्निहित नैतिक मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति हैं। उस मनोविज्ञान की समझ लोगों को एक साथ लाने में मदद कर सकती है। मगर दुर्भाग्य से अधिकतर उपक्रम इस समझ को बिगाड़ने के ही होते नज़र आते हैं।

विद्वान लोग यह भी कहते हैं कि मानव स्वभाव न केवल आंतरिक रूप से नैतिक है, बल्कि यह आंतरिक रूप से आलोचनात्मक और निर्णयात्मक भी है। यह भी कहा जाता है कि नैतिकता वह असाधारण मानवीय क्षमता है जिसने विश्व में सभ्यता को संभव बनाया। चिकित्सा और समाजशास्त्र के अध्येता कहते हैं कि मानव मस्तिष्क जिस प्रकार भाषा और संगीत के लिए डिज़ाइन किया हुआ है उसी प्रकार वह नैतिकता के लिए भी डिज़ाइन किया हुआ है। वे कहते हैं कि हमारा दिमाग मूलतः नेक है जिसने इंसानों को आपसी मानवीय बंधन में जोड़ कर बड़े सहकारी समूहों, जनजातियों और राष्ट्रों के निर्माण को संभव बनाया है। लेकिन साथ ही, हमारे धार्मिक दिमाग हमारे सहकारी समूह में हमेशा नैतिक संघर्ष से अभिशप्त रहे हैं। भले ही नैतिक जवाबदेही की प्रणालियां हम सभी को कुछ अति करने से रोकती हैं फिर भी कुछ लोग हिंसक तरीकों से धार्मिक लक्ष्य पाने को उचित ठहराते हुए मिल जाते हैं। यह लक्ष्य पाना उनकी कोई बहुत रूमानी कल्पना नहीं होती है, बल्कि उन्हें लगता हैं कि वे इसे वास्तव में हासिल कर सकते हैं।

यह भी हैं कि नैतिक अंतर्ज्ञान स्वतः उत्पन्न होता है। लोगों में समान रूप से और लगभग तुरंत उत्पन्न होता है। सही और गलत के तर्क में जाने से पहले नैतिकता का अंतर्ज्ञान हमारे बाद के तर्क को आगे बढ़ाता हैं। प्रत्येक मनुष्य इसी प्रकार अपनी नैतिकता का निर्धारण

करता है। सबके पास अपने-अपने तर्क होते हैं। हालांकि तर्क एक ऐसी चीज़ है जिसका उपयोग हम सच्चाई का पता लगाने के लिए करते हैं। मगर जब लोग हमसे असहमत होते हैं तब हम बहुधा इस बात से निराश होकर इस तर्क से सोचने लगते हैं कि असहमति वाले लोग कितने नासमझ हैं। ऐसा सोचते हुए हम कितने पक्षपाती और अतार्किक हो जाते हैं वह हमें नहीं दिखता। इसे हम यदि इस तरह समझें कि नैतिक तर्क एक कौशल हैं जिसे हम इंसानों ने अपने सामाजिक एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए विकसित किया है तो चीजें बेहतर समझ में आएंगी। तब हम जान पाएंगे कि अपने कार्यों को सही ठहराने का यह कौशल है जो उन समूहों की रक्षा करने के लिए बनाया गया है जिनसे हम जुड़े होते हैं।

कहते हैं मन, हाथी पर सवार महावत की तरह होता है। महावत का काम हाथी को हांकना होता है। यह महावत हमारा सचेत तर्क है - शब्दों और छवियों की धारा, जिसके बारे में हम पूरी तरह से अवगत हैं। हाथी हमारी अन्य 99 प्रतिशत मानसिक प्रक्रियाएं हैं जो जागरूकता के बाहर होती हैं, लेकिन वास्तव में हमारे अधिकांश व्यवहार को नियंत्रित करती हैं।

कईं बार लगता है कि हम उन लोगों को बेहतर ढंग से मना सकते हैं जिन पर तर्क का कोई असर नहीं होता। नैतिकता में नुकसान और निष्पक्षता के अलावा और भी बहुत कुछ है। एक मनोविज्ञानी का कहना है कि धर्मी मन छह स्वाद कलिकाओं वाली जीभ की तरह होता है। धर्मनिरपेक्ष पश्चिमी नैतिकताएं उन व्यंजनों की तरह हैं जो जीभ के इनमें से सिर्फ एक या दो रिसेप्टरों को सक्रिय करने की कोशिश करते हैं - या तो वे नुकसान के बारे में चिंता करते हैं या फिर पीड़ा, निष्पक्षता और अन्याय के बारे में चिंताएं रखते हैं। लेकिन लोगों के पास कई अन्य शक्तिशाली नैतिक अंतर्ज्ञान भी होता हैं, जैसे कि स्वतंत्रता, वफादारी, अधिकार और पवित्रता का संबंध। नैतिकता बांधती और अंधा करती है। जीव स्नायु विज्ञानी अपने अध्ययनों में बताते हैं कि मनुष्य 90 प्रतिशत चिम्पांजी और 10 प्रतिशत मधुमक्खी हैं। व्यक्ति प्रतिस्पर्धा करते हैं। प्रत्येक समूह में अलग-अलग व्यक्ति हैं, और हम उन प्राइमेट्स के वंशज हैं जिन्होंने उस प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। अध्येता इसे हमारे स्वभाव का बदसूरत पक्ष बताते हैं, जो आमतौर पर हमारी विकासवादी उत्पत्ति के बारे में किताबों में बताया जाता है।

हम वास्तव में स्वार्थी और पाखंडी हैं जो सद्गुणों का दिखावा करने में इतने कुशल हो गये हैं कि हम स्वयं को भी मूर्ख बना लेते हैं। जैसे-जैसे मानव समूह अन्य समूहों के साथ प्रतिस्पर्धा करते गए, मानव स्वभाव भी आकार लेता गया। डार्विन ने बहुत पहले कहा था कि सबसे एकजुट और सहयोगी समूह, आम तौर पर, स्वार्थी व्यक्तिवादियों के समूहों को हरा देते हैं। डार्विन के यह विचार 1960 के दशक में ठुकरा दिए गये थे, लेकिन अब फिर लोकप्रिय हो रहे हैं। नवीनतम अध्ययन उनके विचारों को वापस काम में ले रहे हैं, और इसके निहितार्थ गहरे हैं। वास्तव में हम हमेशा स्वार्थी और पाखंडी नहीं होते हैं। हमारे पास, विशेष परिस्थितियों में, अपने क्षुद्र स्वार्थों को दबा कर एक बड़े शरीर में कोशिकाओं की तरह, या छत्ते में मधुमक्खियों की तरह बने रहने की क्षमता है, जो समूह की भलाई के लिए काम करते हैं। ये अनुभव अक्सर हमारे जीवन के सबसे प्रिय अनुभवों में से एक होते हैं, हालांकि हमारा अहंकार हमें अन्य नैतिक व्यवहार से दूर कर सकता है।

कोई झूठ को सच का आईना तो दिखाए

❑

❑

वेदव्यास

इन दिनों खूब लिखा जा रहा है। और लिखा हुआ पारंपरिक प्रिन्ट मीडिया के साथ नेट आधारित डिजिटल मीडिया पर पढे जाने की अनंत संभावनाओं के साथ दूर-दूर तक पहुंच भी रहा है। उसमें साहित्य भी है। लेखक व साहित्य मनीषी वेदजी अपने आलेख में साहित्य का विवेचन करते हुए उपस्थित हैं। सं.

साहित्य को आज भी 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के पर्याय रूप में ही देखा जाता है। समय का सत्य, समाज का शिव, और प्रकृति का सुन्दर ही इसकी विचारधारा है। हजारों वर्ष से शब्दों की यह महाभारत युद्ध और शांति के बीच जारी है। विकास के नए सोपान इसे ऊर्जा देते हैं और मनुष्य के नए संधान इसे प्रासंगिक बनाते हैं।

यह साहित्य मनुष्य के द्वारा ही मनुष्य के लिए समाज और समय के बीच खड़ा रहता है। राजा और प्रजा के बीच, प्रकृति और मनुष्य के साथ, सूर्य और धूप के मध्य तथा जीवन और जगत के आमने-सामने यह साहित्य ही होता है। मनुष्य क्या सोचता है, मनुष्य क्यों सोचता है और मनुष्य किसके लिए सोचता है जैसी सभी जिज्ञासाएं इस साहित्य में ही निवास करती हैं। नाद ब्रह्म की तरह यह शब्द ब्रह्म मनुष्य के चेतन-अवचेतन का पर्याय है। वेद और पुराण की ऋचाएं, वाल्मीकि और महर्षी वेदव्यास की वाणी इसी का अनहदनाद है। इसका उद्गम मनुष्य का हृदय है और इसकी यात्रा समय का ओर-छोर है तो प्रतिफलन स्मृतियों का भाष्य है।

साहित्य का यह प्रवाह मनुष्य के बिना कुछ भी नहीं है। यह संविधानों का संविधान है और जिजीविषा का महाघमासान है। इसे कभी कालिदास गाते हैं तो कभी कबीरदास सुनाते हैं। इसे दर्शन में ढूंढा जाता है तो कभी अरविन्द और विवेकानन्द के इतिहास में पढ़ा जाता है। सूरदास और तुलसीदास भी साहित्य में मनुष्य के समय की नील जल सोई परछाइयों की तरह हैं। साहित्य वाणी को अर्थ देता है, ज्ञान को सामर्थ्य प्रदान करता है और अंधकार में प्रकाश का परिचालक बन जाता है।

साहित्य केवल शब्दों का जोड़ना भी नहीं है और न ही इसे समय का प्रलाप कहा जा सकता है। यह तो मनुष्य के मन और विचार का, विवेक और विस्तार का, आधार और व्यवहार का ऐसा नीर-क्षीर विवेचन है जिसे दादी कहती है और पोते सुनते हैं। साहित्य की अवधारणा मनुष्य मन की स्वायत्तता में जीवित है तथा इसे आचार्यों और प्राचार्यों की व्याख्याओं से बांधा नहीं जा सकता। विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम साहित्य की सीमाएं तय नहीं कर सकते और मीडिया भी इसके प्रभाव को धूमिल नहीं बना सकता। परिवर्तन के सभी प्रभाव और दबाव साहित्य में भी ज्वार भाटा की तरह बोलते हैं तथा

साहित्य इसीलिए मनुष्य और समय के बीच चेतन और अवचेतन तक मुखरित रहता है।

साहित्य क्या है और क्यों है तथा इसकी सार्थकता कौन तय करता है। इस तरह के प्रश्नों से कुछ बाहर निकलकर देखें तो हमें यह भी मालूम होगा कि साहित्य का उद्देश्य और अवधारणाएं भी निरन्तर बदलती रहती हैं। साहित्य कोई जड़ पदार्थ नहीं है तथा साहित्य में भी अंतिम सत्य का प्रादुर्भाव मनुष्य के मन की दिशाओं में लगातार बदलता रहता है। यह साहित्य मनुष्य के जीवन संसार का ही एक विस्तार है। छंद, सवैया, गीत, नवगीत, कविता, नई कविता, कहानी, उपन्यास, यात्रा संस्मरण, आत्म-कथा, निबंध, रिपोर्ताज, नाटक, विधाएं इस साहित्य के सृजनघाट है जहां विचार और कल्पना विवेक और यथार्थ के कपड़े उतार कर नहाती हैं।

शेक्सपीयर, मेक्सिम गोर्की, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पाब्लोनरुदा, नाजिम हिकमत, प्रेमचंद और फैज अहमद फैज जैसे सैकड़ों शब्द पुरुष इस साहित्य के सहयात्री हैं। परम्परा, सभ्यता और संस्कृति की सभी त्रिवेणियां इस संगम में समाहित है। साहित्य इतना निर्मम है और इतना निर्मल भी है कि कहीं यह महाभारत बन जाता है तो कहीं यह रामायण की चौपाइयों में बिखर जाता है। कहीं यह उपमा बनकर याद आता है तो कहीं यह अतिशयोक्ति के भेष में मिलता है। यह रस सिद्धांत भी है तो यह विचार का व्यावहारिक रूपांतरण भी है। साहित्य को लेकर समय और इतिहास की चिंताएं भी हमने देखी हैं तो सुकरात, अरस्तु, गैलीलियो और आइंस्टीन के सत्य से साक्षात्कार भी हमें

साहित्य का उद्देश्य और अवधारणाएं भी निरन्तर बदलती रहती हैं। साहित्य कोई जड़ पदार्थ नहीं है तथा साहित्य में भी अंतिम सत्य का प्रादुर्भाव मनुष्य के मन की दिशाओं में लगातार बदलता रहता है। यह साहित्य मनुष्य के जीवन संसार का ही एक विस्तार है।

विरासत में मिले हैं। मनुष्य के मनोविज्ञान और पराज्ञान को जानने और उसका समानीकरण तय करने का एकमात्र पैमाना साहित्य ही है। यह साहित्य दुनिया की हजारों भाषाओं और बोलियों में प्रवास करता है, और यह साहित्य ही शब्द के रथ पर बैठाकर स्मृति के गर्भ में दुबक जाता है। यह जरूरी नहीं है कि लिखा जाय वही साहित्य है और यह भी सम्पूर्ण नहीं है कि बोला जाय वही साहित्य है, बल्कि साहित्य तो काल की तरह ऐसा अजर-अमर तत्व है जो चिंतन और मीमांसा के बीच और अद्धैत के सानिध्य में, भ्रम और यथार्थ के पास-पड़ौस में तथा इच्छा और आकांक्षाओं के सहवर्ती के रूप में हमें रोज जागते हुए भी और सोते समय सपनों में भी मिलता रहता है।

साहित्य इसीलिए समय और समाज की चौखट है तथा ज्ञान और विज्ञान ही इसकी खिड़कियां हैं। इसके गर्भगृह में कोई राम और रहीम नहीं रहता वरन् एकमात्र मनुष्य रहता है। यह मनुष्य न जो पूरब-पश्चिम में बंटा हुआ है और न ही इसे योग और भोग की तरह विभाजित किया जा सकता है। आदिम कबीलाई जीवन से लेकर अब मंगलग्रह की यात्रा तक के इसके सभी सरोकार केवल साहित्य, संगीत और कला के मेहंदी मांडणों में ही सुने जा सकते हैं। यह साहित्य ही बताता है कि सत्य का किस तरह लोकगमन हुआ और शब्द ने किस तरह बहेलिया बनकर क्रोंच पक्षी का वध किया। हम अक्सर कभी होमर, दांते, मार्क्स और एंजिल्स में साहित्य को ढूंढते हैं तो कभी शब्दों की चिताओं पर लग रहे मेलों में खोजते हैं जो शब्द की सत्यवेदी पर कुर्बान हो गए। राजपाट छोड़कर जो भर्तृहरि बन गए, घर-संसार छोड़कर सिद्धार्थ हो गए या फिर महावीर की तरह दिगम्बर में साकार हो गए। ईसा की तरह सूली पर लटक गए, महात्मा गांधी की तरह गोली खाकर है राम! में समा गए, मार्टिन लूथर किंग की तरह काले-गोरों

साहित्य इसीलिए समय और समाज की चौखट है तथा ज्ञान और विज्ञान ही इसकी खिड़कियां हैं। इसके गर्भगृह में कोई राम और रहीम नहीं रहता वरन् एकमात्र मनुष्य रहता है। यह मनुष्य न जो पूरब-पश्चिम में बंटा हुआ है और न ही इसे योग और भोग की तरह विभाजित किया जा सकता है।

का गीत बन गए अथवा मीरां बाई की तरह जहर का प्याला पीकर भी प्रेम की दीवानगी पर चलते रहे। इस सबके पीछे से कहीं मनुष्य की स्वतंत्रता, सह अस्तित्व और विकास की बहस ही सुनाई पड़ रही थी क्योंकि सत्य तो वही है जो देखा, सुना और समझा नहीं गया है साहित्य वही है जो अब तक खोजा नहीं गया है, मनुष्य वही है जो अब तक रचा नहीं गया है। शब्द वही है जो अब तक वर्णमाला से बाहर है तथा वाणी और स्मृति वही है जिसे हम आज तक किसी सुरताल में बांध नहीं पाए हैं।

साहित्य की सरस्वती सभी देशों में बहती है। कोई भी पूंजी और सामाजिक व्यवस्था इसके टुकड़े नहीं कर सकती। कोई भी शासन और तंत्र इसका गला नहीं घोट सकता। यह एक ऐसी आवाज है जो जितनी अधिक बंद की जाती है उतनी ही अधिक गूंजती है। लोक से लोकोत्तर बन जाती है और जंगल में मंगल की तरह, छवियों में आयाम की तरह, चेतना में उमर खैयाम की तरह, खेतों में बसंती परिधान की तरह, सत्ता और व्यवस्था के रू-ब-रू सम्मान की तरह, संवेदनाओं के उफान की तरह, सैनिक के प्रयाण की तरह, ऋषिपुत्रों के अभियान की तरह, सरोकार के धनुषबाण की तरह, नीति और सार के आख्यान की तरह, प्रकृति और मनुष्य के बीच सुगंध की तरह रम जाती है। साहित्य इसीलिए भक्ति, शक्ति और प्रेम की त्रिवेणी है, योग से भोग तक का सफर है तो मनुष्य और समाज की बदलती सभ्यताओं और संस्कृतियों का गवाक्ष है। यह साहित्य ही है जहां चेतना को काम, क्रोध, मद, लोभ और माया के दैत्य नहीं सताते और यह शब्द पुत्र ही है जो कालातीत और कालजयी रहता है।

हमारे देश में साहित्य और संस्कृति को एक दूसरे का परक पूरक माना गया है। दर्शन और चिंतन परम्परा का अनवरत यज्ञ कहा गया है तो चन्द्रमा की सोलह कलाओं की तरह मनुष्य मन की लीलाओं का वृन्दावन भी समझा गया है। वीर गाथाकाल से लेकर आधुनिक काल तक जो कुछ लिखा-सुना गया केवल वही साहित्य नहीं है अपितु शब्द और साहित्य तो मनुष्य की प्रागैतिहासिक संरचना को समझने का भी पहला सूत्र है।

साहित्य संत, सती और सूरमाओं का ही खेल मैदान नहीं है, साहित्य किसी महाजनी सभ्यता का प्रस्थान भी नहीं है, साहित्य किसी आदि विद्रोही का जयगान भी नहीं है और साहित्य नौसिखिये शब्द जीवियों का मचान भी नहीं है। यह चिंतन और मनन का एक ऐसा गंभीर लोकाचरण है जिसकी इतिश्री एक मनुष्य के लिए नहीं होकर सदैव लोकमंगल में ही समाहित, संयोजित और विकसित होती है।

साहित्य में जहां मनुष्य और उसके समय का दिग्दर्शन होता है, वहां साहित्य में मन, वचन और कर्म की परछाईयों का भी दूध का दूध और पानी का पानी किया जाता है। समय के प्रभाव से साहित्य के स्वर भी बदलते हैं तथा सरोकार भी नया रूप और अवधारणाएं ग्रहण करते हैं, लेकिन साहित्य को समझना, देखना और परिभाषित करना कोई बच्चों का खेल नहीं है। इस साहित्य में सामाजिक न्याय तो है पर आरक्षण का प्रावधान नहीं है। यहां स्वायत्तता तो है लेकिन सामाजिक सरोकार भी छोड़े नहीं जा सकते। यह एक साहित्य ही है जिसमें मनुष्य विरोधी और जनकल्याण के खिलाफ चलने या चलाने की पूरी रोक है। इसलिए साहित्य की चौखट से मनुष्य, समाज और समय की सभी छोटी-बड़ी दस्तक को सुनने की कोशिश करें। ❑

संघमित्र देसाई का निधन

गांधी/सर्वोदय परिवार की वरिष्ठ सदस्य डाक्टर संघमित्र देसाई (78) का 28 अप्रेल की रात वेडछी (सूरत) में निधन हो गया।

संघमित्र जी को लोग उमा दी नाम से भी जानते थे। वह गांधीजी के सचिव रहे महादेव देसाई की पौत्री और प्रसिद्ध शांतिवादी चितक व गांधी कथा के प्रणेता नारायण देसाई की पुत्री थीं।

उनके परिवार में पति प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी डा.सुरेंद्र गाडेकर और बेटी चारुस्मिता हैं।

उमा दी और उनके पति मिलकर युवा कार्यकर्ताओं के लिए सम्पूर्ण क्रांति संस्थान नामक एक गांधीवादी स्कूल की स्थापना की।

विश्वविद्यालय की डिग्री हमेशा सफलता की कुंजी नहीं होती

मारिया पेट्राकिस

मेलबर्न की यह स्वतंत्र पत्रकार कौशल शिक्षा का महत्व जो महंगी उच्च शिक्षा से कहीं कमतर नहीं है। विश्वविद्यालय की डिग्री के बिना भी कौशल के बल पर लोग अरबपति बने हैं। सं.

फोलोरुन्सो अलाकिजा पिटमैन अपने उस डिप्लोमा का शुक्रिया अदा कर सकती हैं, जिसने उसे अफ्रीका की सबसे अमीर महिलाओं में से एक बनने की राह पर आगे बढ़ाया। प्रशिक्षण के बाद उन्हें कार्यकारी अधिकारियों और बैंकरों के सहायक के रूप में नौकरी मिली, इससे पहले कि वह फैशन डिजाइन का अध्ययन करने और अपना खुद का ब्रांड शुरू करने के लिए आगे बढ़ीं। फोर्ब्स के अनुसार, इसके बाद उन्होंने रियल एस्टेट और तेल अन्वेषण के क्षेत्र में कदम रखा और अनुमानित 1.8 बिलियन डॉलर की संपत्ति अर्जित की।

एक स्कूल के समर्पण समारोह के दौरान अलाकिजा ने कहा, हम सभी एयर-कंडीशनर के नीचे दफ़्तर में बैठकर सफ़ेदपोश नौकरियां नहीं कर सकते। आप अपने खुद के मालिक हो सकते हैं और अपने अंदर ज़्यादा आत्मविश्वास पैदा कर सकते हैं और अपने द्वारा अर्जित कौशल के परिणामस्वरूप कई और परिवारों के लिए भोजन की व्यवस्था कर सकते हैं।

अलाकिजा की यात्रा से पता चलता है कि विश्वविद्यालय की डिग्री हमेशा सफलता की कुंजी नहीं होती है। व्यावसायिक प्रशिक्षण कॉलेज शिक्षा के एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में मान्यता प्राप्त कर रहा है: सभी व्यवसायों में सफल होने के लिए विश्वविद्यालय की पढ़ाई की आवश्यकता नहीं होती है। स्विटजरलैंड, जर्मनी और फिनलैंड में छात्रों को कार्यबल के लिए तैयार करने में व्यावसायिक प्रशिक्षण और सहायता को सफलतापूर्वक शामिल करने का एक लंबा इतिहास है। बिल गेट्स से लेकर मार्क जुकरबर्ग तक, कई बड़े टेक नेताओं ने कॉलेज की पढ़ाई छोड़ दी और अपने व्यवसाय को बनाने में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया।

व्यावसायिक प्रशिक्षण का क्षेत्र विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहाँ स्वदेश या विदेश से प्राप्त विश्वविद्यालय की डिग्री कई लोगों की पहुँच से बाहर होती है- या नियोक्ता की ज़रूरतों के लिए सबसे उपयुक्त नहीं होती है और

बेरोज़गार युवा सरकारों के लिए एक समस्या पेश करते हैं।

विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और यूनेस्को की अगस्त 2023 की रिपोर्ट में पाया गया कि निम्न और मध्यम आय वाले देशों में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण श्रम बाजार में आवश्यक कौशल से मेल नहीं खाते हैं। ये देश भविष्य में इन कौशलों की मांग में होने वाली बड़ी वृद्धि के लिए भी तैयार नहीं हैं।

शोध से व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की मिली-जुली सफलता देखने को मिली है। उन्होंने कहा कि कार्यक्रमों को सावधानीपूर्वक डिजाइन करना आवश्यक है, ताकि उनमें ऐसी विशेषताएं शामिल हों जो सबसे अधिक आशाजनक हों और दिए गए संदर्भ के लिए उपयुक्त हों।

जे-पीएएल के नाम से मशहूर मैसाचुसेट्स इंस्टीटच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी-आधारित शोध केंद्र ने अर्जेंटीना और बांग्लादेश से लेकर तुर्की और अमेरिका तक के देशों में व्यावसायिक और कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर 28 अध्ययनों की समीक्षा की। उसमें पाया गया कि व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम जो मांग वाले क्षेत्रों की ओर अच्छी तरह से लक्षित होते हैं, आदर्श रूप से विश्वविद्यालय की डिग्री की तुलना में बेहतर तनख्वाह वाली नौकरी के लिए अधिक व्यवहार्य विकल्प प्रदान कर सकते हैं।

जे-पीएएल के शोध से पता चलता है कि व्यावसायिक और कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य लोगों को किसी विशेष व्यवसाय या क्षेत्र में नौकरियों के लिए तैयार करके एक मजबूत श्रम शक्ति का निर्माण करना होता है। प्रशिक्षण, जिसमें व्यावहारिक कार्य अनुभव शामिल हो सकता है, आमतौर पर एक प्रमाणन या डिप्लोमा की ओर ले जाता है जो नियोक्ताओं को एक विश्वसनीय कौशल संकेत प्रदान करके लोगों को नौकरी पाने में मदद कर सकता है,

विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और यूनेस्को की अगस्त 2023 की रिपोर्ट में पाया गया कि निम्न और मध्यम आय वाले देशों में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण श्रम बाजार में आवश्यक कौशल से मेल नहीं खाते हैं।

सबसे सफल क्षेत्रीय रोजगार कार्यक्रमों की कई सामान्य विशेषताएं-जैसे उद्योग-मान्यता प्राप्त प्रमाणन प्रदान करना, सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण को जोड़ना, और नियोक्ताओं के साथ मजबूत संबंध प्रदान करना-वही विशेषताएं हैं जो हम अमेरिका के बाहर आशाजनक कार्यक्रम मॉडल में देखते हैं।

व्यवसाय शुरू करने के लिए किसी प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से बाहर निकलना व्यावसायिक प्रशिक्षण चुनने जैसा नहीं है, लेकिन वैकल्पिक शैक्षिक पथों को चुनने वाले सफल उद्यमियों की संख्या इस तर्क को पुष्ट करती है कि विश्वविद्यालय सभी के लिए सबसे अच्छा या सबसे किफ़ायती विकल्प नहीं हो सकता है।

एपल के सह-संस्थापक स्टीव जॉब्स ने एक सुलेख पाठ्यक्रम चुना जिसने उन्हें एप्पल मैकिन्तोश कंप्यूटर के डिज़ाइन के लिए प्रेरित किया। वे एक उच्च प्रतिष्ठित लेकिन महंगे कॉलेज से बाहर निकल गये, जिसे उनका परिवार वहन नहीं कर सकता था।

स्कूल छोड़ने और प्रशिक्षु ऑटो रिपेयरमैन बनने के बाद सोइचिरो होंडा ने अपने नाम की कार निर्माता कंपनी की स्थापना की। टीवी शेफ जेमी ओलिवर ने गृह अर्थशास्त्र में व्यावसायिक योग्यता के साथ शुरुआत की। बारूच कॉलेज ड्रॉपआउट राल्फ लॉरेन ने अपना खुद का फैशन ब्रांड लॉन्च करने से पहले टाईयां बेची।
विश्वविद्यालय शिक्षा की बढ़ती लागत लोगों पर भारी पड़ रही है। विश्वविद्यालयों और व्यावसायिक प्रशिक्षण दोनों को श्रम बाजार की बदलती गतिशीलता के साथ तालमेल बनाए रखने और प्रासंगिक बने रहने में बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

लेकिन तथ्य यह है कि व्यावसायिक प्रशिक्षण अक्सर अधिक सुलभ होता है। इसका मतलब है कि प्रतिभागियों के लिए कम लागत और कम समय की प्रतिबद्धताओं को देखते हुए, ये कार्यक्रम विश्वविद्यालय अध्ययन के आशाजनक विकल्प हो सकते हैं।

क्षमता को अधिकतम करने और नौकरियों के परिदृश्य में बदलाव के साथ श्रमिकों पर नकारात्मक प्रभावों से बचने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को डिज़ाइन किया जा सकता है। ❑

एआई की चुनौती और कक्षा में रचनात्मकता

❑

❑

अम्मेल शेरोन

नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी में असिस्टन्ट प्रोफेसर का यह आलेख कक्षाओं में एआई के आने की चुनौती से निबटने पर केंद्रित है। सं.

सैम ऑल्टमैन की हाल ही में की गई घोषणा के जवाब में कि एक एआई मॉडल द्वारा लिखी गई कहानी रचनात्मक लेखन में अच्छी है गार्जियन ने एआई और रचनात्मकता पर चर्चा की एक शृंखला प्रकाशित की जिसमें जीनत विंटरसन और कामिला शम्सी सहित कई लेखक शामिल थे। कहानी दुःख के बारे में एक मेटाफ़िक्शनल कथा है। विंस्टरसन ने इसे सुंदर और मार्मिक पाया। वह एआई को वैकल्पिक बुद्धिमत्ता के रूप में संदर्भित करती है और तर्क देती है कि 'अन्य' होने की इसकी क्षमता वास्तव में वही है जिसकी मानव जाति को आवश्यकता है, क्योंकि हम ग्रहों की तबाही और युद्ध की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं।

शम्सी जैसे लेखकों ने चिंता व्यक्त की क्योंकि उन्हें आश्चर्य हुआ कि एआई कहानी कितनी विश्वसनीय थी। फिर भी इंटरनेट पर पाठकों ने वाक्यों को उनके अर्थहीनता के लिए चुना, जैसे, मुझे कहीं से शुरू करना है, इसलिए मैं एक ब्लिंकिंग कर्सर से शुरू करूंगा, जो मेरे लिए बफर में एक प्लेसहोल्डर है, और आपके लिए एक आराम दिल की छोटी बेचैन धड़कन है। एक प्रतिरूपक होना चाहिए, लेकिन उच्चारण मेरे लिए कभी नहीं था। जैसा कि एआई द्वारा उत्पन्न गद्य मानव और मशीन रचनात्मकता के बीच की रेखाओं को धुंधला करना जारी रखता है, बहस भविष्य के बारे में उत्साह और बेचैनी दोनों को रेखांकित करती है जहां कहानी सुनाना अब मानव अनुभव का क्षेत्र नहीं रह सकता है।

अधिकांश रोचक प्रतिक्रियाएं इस विडंबना को स्वीकार करती हैं कि दुख की यह कविता किसी वास्तविक अनुभव या भावना के स्रोत से उत्पन्न नहीं होती है। अपने आध्यात्मिक आख्यान में, एआई का यांत्रिक खालीपन खुद पर वापस लौटता है, यह स्वीकार करते हुए कि स्मृति को बनाए रखने में असमर्थता इसे शोक करने में असमर्थ बनाती है। कहानी हमें बताती

है, मैं भूतों का लोकतंत्र नहीं तो कुछ भी नहीं हूँ। विंटरसन का तर्क है कि यह देखने और होने के नए तरीके खोलता है, एक निमंत्रण जो शिक्षकों के लिए जबरदस्त क्षमता रखता है।

बैंगलोर स्थित नेशनल लॉ स्कूल ने छात्रों द्वारा जनरेटिव एआई के व्यापक उपयोग को संबोधित करने के लिए एक एआई नीति का मसौदा तैयार किया है। इस मसौदे में विभिन्न रणनीतियों पर विचार किया गया है, जिसमें पूर्ण प्रतिबंध, चयनात्मक एकीकरण – जैसे व्याकरण जांच के लिए एआई की अनुमति देना लेकिन असाइनमेंट लिखने के लिए नहीं – और स्पष्टता और प्रस्तुति में सुधार के लिए एक उपकरण के रूप में एआई का उपयोग करने के लिए सक्रिय प्रोत्साहन शामिल है। एआई के उपयोग पर प्रतिबंध लगाना न तो व्यवहार्य है और न ही लाभदायक। इसके बजाय यह चयनात्मक प्रतिबंध की सिफारिश करता है। जबकि एआई को परीक्षाओं में या साहित्यिक चोरी करने वाले तरीकों से अनुमति नहीं है, छात्र इसका उपयोग विचार-मंथन, शोध करने और परियोजनाओं को विकसित करने के लिए कर सकते हैं। संकाय अपने पाठ्यक्रमों में एआई के उपयोग को विनियमित भी कर सकते हैं।

शिक्षकों को डर है कि ए.आई. द्वारा उत्पन्न सारांश उनकी भूमिका को कम कर देंगे। अनावश्यकता के बारे में चिंता करने के बजाय, हमें उन परिस्थितियों पर विचार करना चाहिए, जिनमें कक्षा में तैयारी के कई घंटे, चुनौतीपूर्ण पाठ के ए.आई. द्वारा उत्पन्न सारांश के समान महत्व रखते हैं। यह तुल्यता मूल्यांकन के तरीके पर निर्भर

करती है – जब मूल्यांकन अवैयक्तिक, संक्षिप्त और परिणाम-उन्मुख होते हैं, तो वे अक्सर यांत्रिक उत्तरों की मांग करते हैं।

इसके बजाय, ए.आई. की रचनात्मक शून्यता हमें उच्च शिक्षा कक्षा में एक भावात्मक कल्पना को विकसित करने के लिए वैकल्पिक शैक्षणिक दृष्टिकोणों पर विचार करने के लिए आमंत्रित करती है, जहां छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमताओं को बातचीत, जिज्ञासा और एक साथ सीखने की भावना से आकार दिया जाता है। वास्तव में उसी समय जब हमने ए.आई. नीति की शुरुआत की थी, विश्वविद्यालय ने संकाय सदस्यों के साथ अनिवार्य छोटे-समूह चर्चाएँ भी शुरू की थीं। ट्यूटोरियल सिस्टम के विपरीत, जो अधिक कठोर अध्ययन की ओर उन्मुख है, छोटे समूह चर्चाएँ छात्र हितों के इर्द-गिर्द बातचीत की सुविधा प्रदान करती हैं जो संकाय सदस्यों को छात्र की ज़रूरतों को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती हैं। यह सी. राइट मिल्स द्वारा समाजशास्त्रीय कल्पना की परिभाषा को सुगम बनाता है। यह व्यक्तिगत अनुभवों को व्यापक सामाजिक संरचनाओं और ऐतिहासिक संदर्भों से जोड़ने की क्षमता है।

इस तरह से देखा जाए तो कक्षा में ए.आई. का आना योग्य है। तैयार-से-उपभोग सारांश के लिए अभी भी गहन वैचारिक तैयारी की आवश्यकता होती है। रचनात्मकता के लिए, मैंने अपना ध्यान कल्पना और विश्व-निर्माण अभ्यासों की ओर स्थानांतरित कर दिया है, जहाँ छात्र एक-दूसरे के साथ अपनी अंतर्दृष्टि साझा करते हैं, चाहे वह किसी चुनौतीपूर्ण पाठ को पढ़ने से प्राप्त हो या किसी चैटबॉट के साथ संलग्न होने से। चूंकि ए.आई. हमें डेटा के रूप में ग्रहण करता है, इसलिए हमें अप्रत्याशित संभावनाओं के भूतों के साथ सह-अस्तित्व में रहना सीखना चाहिए – भूतों का लोकतंत्र।❑

धरती का रहस्य

❑

दिक्काल के इस विस्तार में
निरंतर फैला हुआ ब्रह्मांड,
जिसे रचने में प्रकृति ने
लगाए करीब 14 अरब साल।
यह भरा है करोड़ों करोड़ मंदाकिनियों से,
जिनमें से एक है -
हमारी आकाशगंगा – मिल्की वे।
अनंत की इस लघु अनंत – सी आकाशगंगा में
हैं कई सौ अरब तारे।
यदि इस आकाशगंगा के एक सिरे से
प्रकाश का एक कण चले
तो दूसरे सिरे तक पहुंचने में उसे लगें
एक लाख प्रकाशवर्ष।
पर इस ब्रह्मांड के विस्तार में अपनी
धुरी पर घूमती हुई
ये आकाशगंगा
खुद एक कण से ज्यादा नहीं।
लेकिन ज़रा ठहरो,
इसके किनारे पर है एक तारा
बहुत खूबसूरत, चमकता हुआ
और इस तारे का पड़ोसी तारा,
सबसे करीब होते हुए भी उससे
लगभग चार प्रकाशवर्ष दूर।
इस नन्हे से तारे के चारों तरफ चक्कर
लगाती नौ गेंदे,
कुछ ठोस और कुछ गैस की बनी।
इनके अलग-अलग अद्भुत रंग।
इनमें से एक गेंद,
अद्भुत, निराली, और सबसे अलग,
वायुमंडल की पतली सी चादर में
लिपटी।
दूर से देखें तो नीली-हरी आभा से
दीप्त।
अगर समुद्र के तट से रेत का एक
कण लेकर
उसे उतने ही भागों में बांटे जितने
कुल कण तट पर मौजूद हैं,
तो इस फैले ब्रह्मांड की तुलना में
रेत के उस कण से भी छोटी है यह
नन्ही सी गेंद

❑

गौहर रज़ा

लेखक की पुस्तक 'मिथकों से विज्ञान तक' की कवितानुमा भूमिका से लिया आलेख। सं.

जिसे हम धरती कहते हैं।
ब्रह्मांड के अथाह विस्तार में इस नहीं सी गेंद की बस
इतनी ही हैसियत है।
इस गेंद की उम्र है 4.5 अरब साल
उतनी ही जितनी इसके परिवार के और सदस्यों की है,
ब्रह्मांड के मुकाबले आधे से थोड़ी कम।
यह खूबसूरत गेंद बनी है खारे पानी से भरे समंदर से,
सख्त धरती की परत से,
और अंदर उबलते, पिघले लावे से।
इसमें जमी हुई बर्फ है, मीठे पानी की झीलें हैं,
टाल तलैया है, यहां बहती नदियां हैं,
पहाड़ों पर खिलखिलाते झरने हैं।
समंदरों में, सूखी ज़मीन पर,
और बर्फ पर भी
प्रकृति ने ज़िंदगी की जो हजारों शक्लें रची हैं,
उनमें से हजारों हजार शक्लें,
हर पल पैदा हो रही हैं,
लुप्त भी हो रही हैं,
जीवन के प्रवाह का उत्सव है यह निरंतर, अविराम।
ब्रह्मांड के अनंत विस्तार के बरक्स
इस खूबसूरत नन्ही सी गेंद पर सख्त धरती के सात बड़े टुकड़े हैं
इन नन्हें-मुन्ने टुकड़ों पर नन्हे नन्हे देश हैं,
इन नन्हें-नन्हें देशों में नन्हें-नन्हें शहर हैं,
इन नन्हें-नन्हें शहरों में नन्हें-नन्हें मोहल्ले हैं,
इन नन्हें- नन्हें मोहल्लों में, नन्ही-नन्ही इमारतें हैं,
और इन नन्ही इमारतों में से किसी एक इमारत के
नन्हे से कमरे में बैठ कर शायद आप इसे पढ़ रहे हैं।
सृष्टि ने इस लम्हे, इस क्षण को,
जिसमें आप यह पढ़ रहे हैं
पैदा करने में 13.799 अरब साल से ज्यादा वक़्त लगाया है।
इस कहानी के अंत में
यह सवाल पूछना जरूरी हो जाता है कि
प्रकृति ने 13,799 अरब साल लगा कर
हमें, यानी इंसान को, क्यों पैदा किया,
इंसान का दिमाग जो शायद सृष्टि की सबसे खूबसूरत शै है,
आखिर इसकी क्या जरूरत थी?
जरूरी सही, पर महज विज्ञान का सवाल नहीं है।
यह सवाल तो हमें अलग-अलग
और मिल कर भी पूछना होगा
कि प्रकृति ने क्या हमें इसलिए पैदा किया
कि हम इस नन्ही सी गेंद पर
अपना कब्ज़ा जमाने के लिए
खुद को देशों, जातियों, धर्मों,
नस्लों, प्रांतों, भाषाओं में बांट लें,
और अपनी नन्ही सी ज़िंदगियों में
नफ़रत बोयें और नफ़रत काटें!
क्या हम इस नन्ही सी गेंद पर
इसलिए पैदा हुए कि
इस गेंद के लिए ही खतरा बन जाएं,
इस गेंद के हर प्राणी के लिए खतरा बन जाएं,
ऐसे खतरनाक हथियार
पैदा करें
और
ऐसे हथियारों के अंबार लगाएं
जो इस धरती को ही नष्ट कर दें,
सृष्टि के खज़ाने को
इस तरह लूटें कि
अगली नस्लों के लिए कुछ न बचे,
ऐसा सामाजिक ढांचा बनाएं
जिसमें एक प्रतिशत इंसानों के पास
धरती की 90 प्रतिशत दौलत हो
और 90 प्रतिशत मानवता
रोटी को तरसती रहे!
हमें पूछना होगा कि
क्या सृष्टि के इस सफर को
जारी रखना है या नहीं?
हमें अमन और शांति के हक़ में
इस सफर को जारी रखना है
या जंग हमारा लक्ष्य होगी?
ज़िंदगी के छोटे-छोटे स्वार्थ
पूरे करने की चाह में
हम भूल जाते हैं कि
सृष्टि ने मानवता के लिए
एक और महान लक्ष्य भी चुना है
प्रकृति के रहस्यों को जानने
समझने का लक्ष्य।
विज्ञान इसी लक्ष्य की चाह में
लगातार बढ़ते रहने का नाम है।❑

रेत समाधि : उपन्यास या गांधी से माफ़ी की कहानी ?

डॉ. अरविंद कुमार पुरोहित

डॉ. अरविन्द पुरोहित कृषि विज्ञान के प्रोफेसर रहे हैं लेकिन वनस्पति विज्ञान से परे साहित्य जगत के अध्येता के रूप में भी उनकी पहचान है। इस आलेख में हम बुकर पुरस्कार विजेता उपन्यास 'रेत समाधि' की अपरंपरागत समीक्षा पाते हैं। सं.

हिंदी में राज कमल द्वारा प्रकाशित गीतांजलि श्री की पुस्तक रेत समाधि, को वर्ष 2022 में बुकर पुरूस्कार से नवाज़ा गया। ज़ाहिर है साहित्य के संसार में सनसनी पैदा हुई। गीतांजलि श्री पहले से ही स्थापित लेखिका हैं, प्रसिद्द लेखिका कृष्णा सोबती को अपना गुरु मानती हैं। बहुत चर्चाएं हुई , समीक्षाएं प्रकाशित हुई , प्रशंसाओं के सैलाब के बीच कुछ ऐसी टिप्पणियां भी सामने आई जिन्होंने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर बहस को नए सिरे से आरम्भ कर दिया। खैर, जो कहा जा चुका उस को दोहराने से क्या लाभ ? हाँ, करीब करीब सभी अंतर्राष्ट्रीय पुरूस्कार अंग्रेजी में लिखे हुए या अंग्रेजी अनुवाद पर मिलते हैं। रेत समाधि का अंग्रेज़ी अनुवाद डेज़ी रॉकवेल ने किया है –The Tomb of Sand.

कहना न होगा कि अनुवादक ने मूल रचना के साथ न केवल न्याय किया है, बल्कि भावानुवाद के जरिये अनुसृजन भी किया है। उसमें शब्दों के साथ ध्वनियों का चुनौती पूर्ण अनुवाद भी किया है। इसलिए लेखिका और अनुवादक दोनों को मेरा साधुवाद।

पुरूस्कार की घोषणा के तीन वर्ष बाद मैं यह आलेख इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि मेरी नज़र में यह स्त्री पुरुष के बीच प्रेम और सन्देश की ऐसी कहानी है जिसकी मूल संवेदना है – महात्मा गाँधी से माफ़ी।

अपनी बात मृणाल पांडे के इस कथन से आरम्भ कर रहा हूँ कि रेत समाधि में बहुत निरर्थक बातों के बीच बहुत कुछ सार्थक छुपा है।

उपन्यास की कहानी क्या है ?

कहानी एक अस्सी वर्षीय विधवा स्त्री, चंद्रप्रभा की है जिसने विभाजन के पहले पाकिस्तान में एक अनवर नामक युवक से प्रेम किया और कोर्ट विवाह भी। विभाजन में वे दोनों अलग हो जाते हैं। अनवर पाकिस्तान में रह जाता है और चंद्रप्रभा भारत आ जाती है जहाँ उसका पुनर्विवाह होता है, उसके बेटे, बेटियां, पोते होते हैं। लेकिन पति का

नाम पूछने पर अब भी वह अनवर बताती है। अस्सी साला अम्माँ अपनी बेटी के साथ किसी बहाने से पाकिस्तान जाती है और किसी तरह अनवर को ढूंढ निकालती है। घटना क्रम में अम्माँ पुलिस की गोली लगने से मर जाती है और बेटी अकेली वापिस भारत लौट आती है। कहानी इतनी ही है।

अब बात करें विस्तार की। मृणाल पांडे के कथन को एक बार फिर दोहरा दूँ – यह उपन्यास बहुत सारी निरर्थक चीजों को जोड़ कर सार्थक बना देता है। भाषा की एक अद्भुत प्रवाहमान नदी जो अम्माँ, बेटी, बेटा–बहू, पोते, रोज़ी, रजा, के.के., हिंदुस्तान, पाकिस्तान, पति–शौहर, बुध्द की मूर्ती और अम्माँ की मौत की कहानी को कई लहरिल आवरणों के साथ लुकाती छुपाती, दिखती दिखाती बहती है, इसमें बेटे के अफसराना रहन–सहन, उसकी शान और शौकत से रिटायरमेंट, बहू के आधुनिका होते जाने के साथ रीबॉक के सैंडलों, बेटी की तलाक और फेमिनिस्ट पत्रकार होने, उसके अलग रहने, केके के साथ कामासक्त प्रेम, पोतों के भिन्न स्वभाव, उनके विदेश प्रवास, वहां से लायी छड़ी, और छड़ी के साथ कल्पतरु, हिन्दू परिवारों के पूजा पाठ, वृध्द स्त्रियों की बीमारियां, स्त्री विमर्श के तड़के, गणितज्ञ रामानुजन, पेंटर अमृता शेरगिल, मंटो, कृष्णा सोबती, वास्तु, फेंग शुई, स्त्रियों की आपसी चुहल, काली चिड़िया, सेमिनार, कौव्वे, तीतर , सीटियां, दरवाज़ा, न जाने कितने वर्णन।

यहां कहानी का वह दृश्य वर्णित कर रहा हूं जहां अम्मा अनवर से

इस माफ़ी शब्द में एक कहानी छुपी है। मानो विभाजन की त्रासदी में आदमी अपनी इंसानियत से बिछुड़ गया है, दोनों एक दूसरे को ढूंढ रहे हैं। कई सालों बाद दोनों मिलते हैं। दोनों एक दूसरे से लिपट कर रोते हुए माफ़ी मांग रहे हैं। ये वो माफ़ी है जो महात्मा गाँधी से मांगी जानी चाहिए, लेकिन न कभी मांगी गयी और शायद न कभी मांगी जाएगी।

मिलती है। लकवा–ग्रस्त अनवर खाट पर लेटा हुआ है। अम्मा अनवर् से लिपट कर कई पुरानी बातें याद दिलाती है, राग पूरिया धनाश्री में नगमे सुनाती है, विभाजन की त्रासदी में खुद के न आने की माफ़ी मांगती है, अनवर के न आने के लिए उसे भी माफ़ करती है। तभी अनवर का बेटा अली कमरे में प्रवेश करता हुआ देखता है, अम्मा उसके पिता के सीने से लगी है, उसके पिता का हाथ अलविदा की मुद्रा में उठा हुआ है और वो जैसे कह रहे हैं, माफ़ी। रेत समाधि से अगर कोई एक शब्द ही पकड़ना हो तो मैं कहूंगा माफ़ी। यह शब्द विभाजन की त्रासदी पर लिखे हुए समस्त साहित्य से टकराता है।

इस माफ़ी शब्द में एक कहानी छुपी है। मानो विभाजन की त्रासदी में आदमी अपनी इंसानियत से बिछुड़ गया है, दोनों एक दूसरे को ढूंढ रहे हैं। कई सालों बाद दोनों मिलते हैं। दोनों एक दूसरे से लिपट कर रोते हुए माफ़ी मांग रहे हैं। ये वो माफ़ी है जो महात्मा गाँधी से मांगी जानी चाहिए, लेकिन न कभी मांगी गयी और शायद न कभी मांगी जाएगी।

हमने कभी जुदा न होने की कसमें खायी थी, निभा न सके, हमने शांति, अहिंसा, प्रेम, भाईचारे की बड़ी बड़ी बातें की, लेकिन किया उसके ठीक उलट, धर्म के नाम को इतना बदनाम किया कि नाम से ही डर लगने लगा। हमारे लिए ईश्वर ने पैगम्बर भेजे, अपने पुत्र को भेजा , दसियों बार खुद उतरा लेकिन हम नहीं बदले। सब धर्मों, अवतारों, पेगम्बरों का सार ले कर मोहनदास करमचंद गांधी आये। उन्होंने सत्य, अहिंसा, प्रेम और भाईचारे से जीने का सन्देश खुद अपने जीवन से दिया। लेकिन हम नहीं समझे। हमने ईश्वर को ही मृत घोषित कर दिया और गाँधी की हत्या कर दी। हमने अपने नाखून काट लिए लेकिन उनसे तलवारें, भाले, बरछियां, बंदूकें, तोपें और एटम बम बना लिए। हम बिछुड़ गये, साथ रह न सके; हमने अपनी नफरतों के इज़हार को जिहाद और वीरता समझा और मुहब्बत को शर्म और पाप।

रेत समाधि एक विशुध्द कहानी लगती है जिसकी एक मूल संवेदना है – प्रेम। इसका सन्देश है साबरमती के संत से ये कहना कि तूने आजादी तो बिना खड्ग, बिना ढ़ाल दिलवा दी, लेकिन हम तेरे बताये प्रेम और भाईचारे के मार्ग पर चलने का कमाल न कर सके। माफ़ी। ❑

ई–113, कृष्णा नगर, जोधपुर, 342005

आधुनिक पुरुषत्व का विरोधाभास!

❑

संतोष देसाई

विज्ञापन एवं विपणन पेशे से जुड़े जाने-माने सामाजिक टिप्पणीकार तथा स्तंभकार संतोष देसाई स्त्री और पुरुष संबंधों को इस आलेख में अपनी पैनी दृष्टि से देख रहे हैं। सं.

❑

बहुत से लोग मानते हैं कि आज के ज़माने में पुरुष होना आसान नहीं है। नियम नए हैं, अदृश्य ऊबड़खाबड़ रास्ता है, और वे जो कुछ भी करते हैं लगता है वह ठीक नहीं है। उनमें पीड़ित होने की भावना उभर रही है। पुरुषों का एक वर्ग ऐसा दृढ़ता से महसूस करता है, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर उनके विरोधाभासी व्यवहार सामने आते हैं जिसमें पुरुषोचित्त अकड़ दिखाने से लेकर चिंतित आत्म-संदेह तक शामिल है।

आज के लैंगिक समीकरणों से परे एक ऐतिहासिक संदर्भ छिपा है - पुरुष अपनी माताओं से बिना किसी जवाबदेही के मिलने वाले बिना शर्त प्यार और पिताओं से सीमित समर्थन और लगातार आलोचना के बीच उलझे हुए बड़े हुए हैं। इसने उनकी भावनात्मक निर्भरता और दीर्घकालिक अपर्याप्तता के संयोजन को बढ़ावा दिया, जिसे मनोविश्लेषक सुधीर कक्कड़ ने मातृ स्वर्ग और पितृ न्यायाधिकरण गतिशीलता कहा है। एक स्तर पर ऐसी निर्विवाद पुष्टि प्राप्त हुई कि पुरुष कुछ भी गलत नहीं कर सकता है, और दूसरी ओर, उसने जो कुछ भी किया वह अपर्याप्त था। मां ने सब कुछ माफ कर दिया, और पिता ने कुछ भी स्वीकार नहीं किया,। इससे पुरुष हमेशा के लिए भावनात्मक रूप से निर्जन भूमि में डोलता रहा।

अधिकार-प्राप्त अहंकार और आत्म-संदेह के घातक मिश्रण ने उसमें एक खंडित आत्म-बोध पैदा कर दिया, जिस पर काबू पाने के लिए पुरुष जीवन भर प्रयास करता रहता है। जब तक पुरुषत्व को प्रदाता, रक्षक, अधिकार-संचालक जैसी बाह्य भूमिकाओं के माध्यम से व्यक्त किया जाता है, तब तक उसकी आंतरिक अक्षमता को छिपाया जा सकता है, लेकिन आज के समय में पुरुषत्व से अपेक्षित मांगें अधिक जटिल हैं और पुराने नियम-कायदें पर्याप्त नहीं हैं।

इस पुरुषत्व के मूल में एक विरोधाभास विद्यमान है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था, जिसे अक्सर महिलाओं को अपने संरचनात्मक बंधनों में जकड़ने के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, पुरुषों के साथ भी ऐसा ही करती है। जबकि वे विषम शक्तियों का लाभ उठाने वाले लाभार्थी हैं, मगर वे भी इसके कठोर दायरे में फंसे हुए हैं। यह उन्हें एक अजीबोगरीब स्थिति में डाल देता है -

वे शायद ही यह शिकायत कर सकें कि उन्हें बहुत अधिक शक्ति प्रदान करना अनुचित है, भले ही उस शक्ति के साथ उनकी भूमिका के संदर्भ में कुछ शर्तें जुड़ी हुई हों।

जैसे-जैसे महिलाएं अपने को अधिक अभिव्यक्त करते हुए अपनी क्षमता का प्रयोग करने लगी हैं, पुरुषों के लिए ऐसा प्रतीत होता है कि दुनिया उनके विपरीत दिशा में जा रही है। उन्हें पारंपरिक अपेक्षाओं का बोझ महसूस होता रहता है, जबकि उन्हें कई नई अपेक्षाओं से भी निपटना पड़ता है।

यह कह देने से कोई मदद मिलती कि हमारे सांस्कृतिक इतिहास में पहली बार, पुरुष खुद को महिलाओं द्वारा सक्रिय रूप से आंके जाने और अक्सर कमतर पाए जाने का अनुभव कर रहे हैं। यह शक्ति गतिशीलता में एक भूकंपीय बदलाव है, जिससे निबटने के लिए अधिकांश भारतीय पुरुषों के पास न तो भावनात्मक उपकरण हैं और न ही शब्दावली। उन्होंने महिलाओं के आकलन को कभी भी महत्व नहीं दिया, लेकिन अब उन्हें उन बाहरी निर्णय की अस्थिर वास्तविकता का सामना करना पड़ रहा है, जिनसे आज्ञापालन की अपेक्षा की जाती रही है।

चूंकि महिलाएं अपनी आवश्यकताओं, इच्छाओं और पहचान को अभिव्यक्त करने में अधिक स्वतंत्रता की मांग करने लगी हैं, पुरुष अक्सर इन संकेतों को विकृत दृष्टि से देखते हैं। वे महिला स्वायत्तता के संकेतों को यौन उपलब्धता के रूप में समझने लगते हैं, जिसे लोकप्रिय संस्कृति प्रोत्साहित करती है। और जब वैसा नहीं होता है तो वे निराश हो जाते हैं। परिणामस्वरूप उनकी निराशा आक्रोश या हिंसा में बदल जाती है।

चोट की यह भावना नई प्रतिक्रियाओं को जन्म देती है, जैसे पुरुष अधिकारों की सक्रियता और नारीवाद विरोधी बयानबाजी। यह भावना बदलते मानदंडों से विस्थापित महसूस करने वाले पुरुषों को सामुहिक और व्याख्यात्मक रूपरेखा प्रदान करती है। फेमिनाज़ियों की भाषा इस दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसमें समानता के प्रयासों को उत्पीड़न के बराबर माना जाता है क्योंकि उनके ऐतिहासिक विशेषाधिकार में कोई भी कमी उन लोगों को भेदभाव की तरह लगती है जो लाभ के आदी हैं।

विवाह को सेक्स से अलग करने की बढ़ती प्रवृत्ति ने नई तरह की चिंताओं को जन्म दिया है। पारंपरिक विवाह प्रणाली ने वस्तुतः यह सुनिश्चित किया था कि प्रत्येक पुरुष को अपने व्यक्तिगत गुणों की परवाह किए बिना संगति तक पहुंच प्राप्त हो। आज, जबकि महिलाओं के पास अधिक विकल्प हैं, कम सामाजिक पूंजी वाले पुरुष खुद को हाशिये पर महसूस करते हैं।, विशेष रूप से उन पुरुषों के बीच, जो यह समझते हैं कि उनमें वे गुण नहीं हो सकते हैं जिन्हें महिलाएं स्वतंत्र रूप से चुनती हैं, यह एक वास्तविक चिंता है।

क्योंकि लैंगिक शक्ति संबंधों में ऐतिहासिक संशोधन हो रहा है, कई पुरुषों को लगता है कि दुनिया उनके खिलाफ अनुचित तरीके से खड़ी है। वे संस्थागत संरचनाओं को महिलाओं के लाभ की ओर झुकते हुए देखते हैं। उन्हें लगता है कि उनकी चिंताओं को खारिज कर दिया जाता है जबकि महिलाओं की शिकायतों को तत्काल वैधता मिल जाती है।

चोट की यह भावना नई प्रतिक्रियाओं को जन्म देती है, जैसे पुरुष अधिकारों की सक्रियता और नारीवाद विरोधी बयानबाजी। यह भावना बदलते मानदंडों से विस्थापित महसूस करने वाले पुरुषों को सामुहिक और व्याख्यात्मक रूपरेखा प्रदान करती है। फेमिनाज़ियों की भाषा इस दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसमें समानता के प्रयासों को उत्पीड़न के बराबर माना जाता है क्योंकि उनके ऐतिहासिक विशेषाधिकार में कोई भी कमी उन लोगों को भेदभाव की तरह लगती है जो लाभ के आदी हैं। वे जो संरचनात्मक लाभ प्राप्त करते हैं, उनको वे नज़र नहीं आते हैं। उन्हें लगता है कि महिलाओं के विशेषाधिकार बढ़ते जा रहे हैं। इस नए लिंग कथा का अनुचित लाभ उठाने वाली महिलाओं के उदाहरण पुरुषों की इस शिकायत की भावना को वैध बनाने में मदद करते हैं।

यहां तक कि लिंगों के बीच संचार भी एक बारूदी सुरंग बन गया है। सभी पुरुष नहीं का पुरुष रक्षात्मक नारा व्यक्तिगत अपवादों द्वारा प्रणालीगत आलोचना को पटरी से उतार दिए जाने से उपजी महिला हताशा से टकराता है। महिला का दृष्टिकोण है कि, लगातार अपवादों को स्वीकार करना ऐसा लगता है जैसे तात्कालिक चिंताओं को संबोधित करने के बजाय अधिक शक्तिशाली लोगों को आराम दिया जा रहा हो। पुरुषों के दृष्टिकोण में, इस

रियायत देने से इनकार करना अनुचित कठोरता के रूप में दिखाई देता है।
हम खुद को समझ के एक गतिरोध में पाते हैं। पारंपरिक निश्चितताओं के लुप्त हो जाने के कारण पुरुषों को वास्तविक भटकाव का अनुभव होता है, फिर भी उनकी व्याख्या अक्सर ऐतिहासिक संदर्भ और उनके द्वारा प्राप्त निरंतर लाभ दोनों को पहचानने में वे विफल रहते हैं। महिलाएं आवश्यक स्वतंत्रताओं को पाने का प्रयत्न करती हैं। मगर वे कभी-कभी अपने इस प्रयत्न के कारण अलग-अलग अपेक्षाओं के साथ पले-बढ़े पुरुषों के सामने पैदा होने वाले पहचान के संकट को कम करके आंकती हैं।
आगे का रास्ता एक नाजुक संतुलन की मांग करता है - हानिकारक प्रतिक्रियाओं को वैध ठहराए बिना पुरुषों की वास्तविक उलझन को स्वीकार करना और तेजी से हो रहे परिवर्तन के विध्वंसकारी सामाजिक परिणामों को खारिज किए बिना महिलाओं की उचित स्वायत्तता को मान्यता देना। जब तक हम ऐसे ढांचे का विकास नहीं कर लेते जो दोनों लिंगों को इस विकसित परिदृश्य को बेहतर समझ के साथ संचालित करने की अनुमति देते हैं, तब तक हम असमंजस की एक बातचीत में फंसे रहेंगे - दो परिवर्तनशील दुनियाएं, अलग-अलग भाषाएं बोलती हैं, जिनमें से प्रत्येक पुरानी व्यवस्था के खंडहरों और नई व्यवस्था की अनिश्चित नींव के बीच एक-दूसरे की वास्तविकता को समझने के लिए संघर्ष कर रही है।❑

जब गांधी जी ने दी कर्म बोने की सलाह

एक बार गांधी जी एक छोटे से गांव में पहुंचे तो उनके दर्शनों के लिए लोगों की भीड़ उमड़ी। गांधीजी ने लोगों से पूछा, 'इन दिनों आप कौन-सा अन्न बो रहे हैं और किस अन्न की कटाई कर रहे हैं?'
तभी भीड़ में से एक वृद्ध व्यक्ति आगे आया और करबद्ध हो बोला, 'आप तो बड़े ज्ञानी हैं। क्या आप इतना भी नहीं जानते कि ज्येष्ठ (जेठ) मास में खेतों में कोई फसल नहीं होती। इन दिनों हम खाली रहते हैं।
गांधी जी ने पूछा, 'जब फसल बोने व काटने का समय होता है, तब क्या बिलकुल भी समय नहीं होता?'
वृद्ध ने जवाब दिया, 'उस समय तो हमें रोटी खाने का भी समय नहीं होता।
गांधी जी बोले, 'तो क्या इस समय तुम बिलकुल निठल्ले हो और सिर्फ गप्पें हांक रहे हो। यदि तुम चाहो तो इस समय भी कुछ बो और काट सकते हो।'
तभी कुछ गांव वाले बोले, 'कृपा करके आप ही बता दीजिए कि हमें क्या बोना और क्या काटना चाहिए?'
गांधी जी ने गंभीरतापूर्वक कहा –
आप लोग कर्म बोइए और आदत को काटिए,
आदत को बोइए और चरित्र को काटिए,
चरित्र को बोइए और भाग्य को काटिए,
तभी तुम्हारा जीवन सार्थक हो पाएगा।

बुरा नारीवादी होना इतना बुरा भी नहीं!

❑

❑

रोक्सेन गे

अमेरिकी लेखिका, प्रोफेसर, संपादक और सामाजिक टिप्पणीकार नारीवाद की जटिलताओं के बीच एक नई राह दिखने की कोशिश कर रही है। सं.

बदुनिया हमारी कल्पना से कहीं ज़्यादा तेज़ी से बदल रही है और यह जटिल है। ये हैरान करने वाले बदलाव अक्सर हमें कच्चा छोड़ देते हैं। सांस्कृतिक माहौल बदल रहा है, खास तौर पर महिलाओं के लिए, क्योंकि हम प्रजनन की आज़ादी में कमी, बलात्कार की संस्कृति के बने रहने और संगीत, फ़िल्मों और साहित्य में महिलाओं के दोषपूर्ण या नुकसानदेह चित्रण से जूझ रहे हैं।

क्या वास्तव में हमें सुना जाएगा? हम महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली असमानताओं और अन्याय के बारे में बात करने के लिए आवश्यक भाषा कैसे खोजें, चाहे वह बड़ी हो या छोटी? जैसे-जैसे मैं बड़ी होती गई, नारीवाद ने इन सवालों के जवाब दिए, कम से कम आंशिक रूप से। नारीवाद में खामियाँ हैं, लेकिन वही इस बदलते सांस्कृतिक माहौल को नेविगेट करने का सबसे अच्छा तरीका प्रदान करता है। नारीवाद ने निश्चित रूप से मुझे अपनी आवाज़ खोजने में मदद की है। नारीवाद ने मुझे यह विश्वास दिलाने में मदद की है कि मेरी आवाज़ मायने रखती है। इस दुनिया में जहाँ बहुत सारी आवाज़ें सुनी जाने की माँग कर रही हैं उसमें मेरी आवाज भी है।

नारीवाद की खामियों को हम उसके द्वारा किए जा सकने वाले सभी अच्छे कार्यों के साथ कैसे जोड़ सकते हैं? सच में, नारीवाद में खामियाँ हैं क्योंकि यह लोगों द्वारा संचालित एक आंदोलन है और लोग स्वाभाविक रूप से दोषपूर्ण हैं। किसी भी कारण से, हम नारीवाद को एक अनुचित मानक पर रखते हैं जहाँ आंदोलन को वह सब कुछ होना चाहिए जो हम चाहते हैं और हमेशा सर्वोत्तम विकल्प चुनना चाहिए। जब नारीवाद हमारी अपेक्षाओं से कम हो जाता है, तो हम तय करते हैं कि समस्या नारीवाद के साथ है, न कि उन दोषपूर्ण लोगों के साथ जो आंदोलन के नाम पर काम करते हैं।

आंदोलनों के साथ समस्या यह है कि, अक्सर, वे केवल सबसे अधिक दिखाई देने वाली हस्तियों, सबसे बड़े मंचों वाले लोगों और सबसे ऊंची, सबसे उत्तेजक आवाज़ों से जुड़े होते हैं। लेकिन नारीवाद वह दर्शन नहीं है जो सप्ताह के लोकप्रिय मीडिया नारीवादी स्वाद द्वारा उछाला जा रहा है, कम से कम पूरी तरह से नहीं।

नारीवाद, हाल ही में, एक निश्चित अपराधबोध से ग्रस्त हो गया है क्योंकि हम नारीवाद को उन महिलाओं

के साथ जोड़ते हैं जो नारीवाद की वकालत अपने व्यक्तिगत ब्रांड के हिस्से के रूप में करती हैं। जब ये प्रमुख लोग वही कहते हैं जो हम सुनना चाहते हैं, तो हम उन्हें नारीवादी पद पर बिठा देते हैं, और जब वे कुछ ऐसा करते हैं जो हमें पसंद नहीं आता, तो हम उन्हें तुरंत नकार देते हैं और फिर कहते हैं कि नारीवाद में कुछ गड़बड़ है क्योंकि हमारे नारीवादी नेताओं ने हमें निराश किया है। हम नारीवाद और पेशेवर नारीवादियों के बीच अंतर भूल जाते हैं। मैं खुले तौर पर खराब नारीवादी के लेबल को अपनाती हूँ। मैं ऐसा इसलिए करती हूँ क्योंकि मैं त्रुटिपूर्ण हूँ और इंसान हूँ। मैं नारीवादी इतिहास में बहुत अच्छी तरह से वाकिफ नहीं हूँ। मैं प्रमुख नारीवादी ग्रंथों को उतना अच्छी तरह से नहीं पढ़ पाई हूँ जितना मैं चाहती हूँ। मेरी कुछ . . . रुचियाँ और व्यक्तित्व लक्षण और राय हैं जो मुख्यधारा के नारीवाद के अनुरूप नहीं हो सकती हैं, लेकिन मैं अभी भी एक नारीवादी हूँ। मैं आपको यह नहीं बता सकती कि अपने बारे में यह स्वीकार करना मेरे लिए कितना मुक्तिदायक रहा है।

मैंने नारीवाद को अस्वीकार कर दिया क्योंकि मुझे आंदोलन की कोई तर्कसंगत समझ नहीं थी। मुझे नारीवादी कहा गया, और मैंने जो सुना वह था, आप एक गुस्सैल, सेक्स से नफरत करने वाली, पुरुषों से नफरत करने वाली पीड़ित महिला हैं। यह व्यंग्य है कि नारीवादियों को उन लोगों द्वारा कैसे विकृत किया गया है जो नारीवाद से सबसे अधिक डरते हैं, वही लोग जिन्हें नारीवाद के सफल होने पर सबसे अधिक नुकसान उठाना पड़ता है।

मैं अपने नारीवाद को सरल रखने की कोशिश करती हूँ। मैं जानती हूँ कि नारीवाद जटिल है और विकसित हो रहा है तथा इसमें खामियाँ हैं। मैं जानती हूँ कि नारीवाद सब कुछ ठीक नहीं कर सका है और न ही कर सकता है। मैं महिलाओं और पुरुषों के लिए समान अवसरों में विश्वास करती हूँ। मैं महिलाओं को प्रजनन स्वतंत्रता और स्वास्थ्य सेवा तक उनकी ज़रूरत के हिसाब से किफ़ायती और निर्बाध पहुँच में विश्वास करती हूँ। मेरा मानना है कि महिलाओं को पुरुषों के बराबर ही समान काम करने के लिए भुगतान किया जाना चाहिए। नारीवाद एक विकल्प है, और अगर कोई महिला नारीवादी नहीं बनना चाहती है, तो यह उसका अधिकार है, लेकिन फिर भी उसके अधिकारों के लिए लड़ना मेरी ज़िम्मेदारी है। मेरा मानना है कि नारीवाद महिलाओं की पसंद का समर्थन करने पर आधारित है, भले ही हम अपने लिए कुछ खास विकल्प न चुनें। मेरा मानना है कि दुनिया भर में महिलाएँ समानता और स्वतंत्रता की हकदार हैं, लेकिन मैं जानती हूँ कि मैं अन्य संस्कृतियों की महिलाओं को यह बताने की स्थिति में नहीं हूँ कि समानता और स्वतंत्रता कैसी होनी चाहिए।

नारीवाद की असफलताओं का मतलब यह नहीं है कि हमें नारीवाद को पूरी तरह से त्याग दें। लोग हर समय भयानक चीजें करते हैं, लेकिन हम नियमित रूप से अपनी मानवता को अस्वीकार नहीं करते हैं। हम भयानक चीजों को अस्वीकार करते हैं। हमें नारीवाद की असफलताओं को अस्वीकार करना चाहिए, बिना इसकी कई सफलताओं और हम कितनी दूर आ गए हैं, को अस्वीकार किए।

हम सभी को एक ही नारीवाद में विश्वास करने की ज़रूरत नहीं है। नारीवाद बहुलवादी हो सकता है जब तक हम अपने साथ मौजूद विभिन्न नारीवादों का सम्मान करते हैं, जब तक हम अपने बीच दरारों को कम करने की कोशिश करने के लिए पर्याप्त परवाह करते हैं। नारीवाद सामूहिक प्रयास से बेहतर सफल होगा, लेकिन नारीवादी सफलता व्यक्तिगत आचरण से भी उभर सकती है।❑

कभी मिले शायद फिर वसन्त वो!

वसन्त का दोष क्या इसमें
अब यदि गर्मियों ने जला दिया
सब जो खिला था
उसने तो खिला दिया
खिल पाया जितना भी
पतझर के बाद।

नहीं, रेगिस्तान बारिश के भरोसे नहीं
आसमाँ मेहरबाँ मुझ पर ज़रा होता–
मैं रेगिस्तान क्यों होता?

होगा अब जो होना होगा
कर्मगति जैसी हो
उसको ढोना होगा
ढो सके जब तक ढो
पर लहरों से अपनी
सपने बुनना मत खो
कभी मिले शायद
फिर वसन्त वो!

–नंदकिशोर आचार्य

❑

गेरार्ड' टी हूफ़्ट

❑

ली बिलिंग्स

पुरुस्कार की घोषणा के बाद विज्ञान पत्रकार तथा साइंटिफिक अमेरिकन में वरिष्ठ संपादक ली बिलिंग्स ने 'टी हूफ़्ट से लंबी बातचीत की जिसका संपादित अंश यहां प्रस्तुत है जिसमें उन्होंने अपनी विरासत और भौतिकी के भविष्य पर विचार व्यक्त किये। सं

प्रकृति के नियमों को अलौकिक बनाने की कोशिश न करें!

❑

गत 5 अप्रैल को प्रख्यात सैद्धांतिक भौतिक विज्ञानी जेरार्ड 'टी हूफ़्ट को मौलिक भौतिकी में सबसे अधिक 3 मिलियन डॉलर नकद राशि के विशेष ब्रेकथ्रू पुरस्कार देने कि घोषणा हुई। 'टी हूफ्ट' को उनके लंबे करियर के दौरान भौतिकी में उनके असंख्य योगदानों के सम्मान में यह पुरस्कार दिया गया है। उनके द्वारा अर्जित प्रतिष्ठित पुरस्कारों की असाधारण संख्या में नोबेल पुरस्कार, वुल्फ पुरस्कार, फ्रैंकलिन मेडल और कई अन्य पुरस्कार शामिल हैं।

प्रश्न: आधुनिक भौतिकी के क्षेत्र में, कुछ ही व्यक्ति गेराई 'टी हूफ़्ट की बराबरी कर सकते हैं। डच सैद्धांतिक भौतिक विज्ञानी का विनम्र, मृदुभाषी तरीका उनके विशाल वैज्ञानिक कद को दर्शाता है। ऐसा लगता है कि आपने अब तक भौतिकी के लगभग सभी बड़े पुरस्कार जीत लिए हैं।

उत्तर: कुछ अब भी बचे हुए हैं! लेकिन, हां, मैंने काफी पुरस्कार जीते हैं। मुझे थोड़ी चिंता इस बात की है कि उनमें से ज़्यादातर एक ही चीज़ के लिए मिले। आपको उस चीज़ के लिए पुरस्कार मिलते रहते हैं जिसे पहले से ही मान्यता मिल चुकी है, जबकि मैंने विज्ञान में ऐसे कई काम किए हैं जो इतने प्रसिद्ध नहीं हैं – कम से कम आम लोगों के बीच तो नहीं।

प्रश्न: आपने जितने पुरस्कार जीते हैं, क्या आपको ऐसा लगता है कि यह सब आपके लिए एक नियमित प्रक्रिया बन गई है, या यह अब भी रोमांचक है?

मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ: कुछ भी नियमित नहीं है। ये सभी चीज़ें अलग–अलग हैं। वास्तव में चरमोत्कर्ष तो नोबेल पुरस्कार ही था, जो हर साल बहुत कम लोगों को दिया जाता है। और वह बहुत खास होता है। लेकिन यह पुरस्कार भी बहुत खास है। यह सचमुच एक बड़ा पुरस्कार है।

प्रश्न: यह आपके वैज्ञानिक करियर के केवल एक पहलू के बजाय उसके पूरे विस्तार को पहचानता है, लेकिन शोधकर्ताओं को आगे की सफलताओं के लिए कोई स्पष्ट रास्ता नहीं दिख रहा है। क्या मानक मॉडल के दशकों लंबे

प्रभुत्व का यह पहलू आपको चिंतित करता है?

उत्तर: नहीं, बिलकुल नहीं। मुझे लगता है कि विज्ञान में स्वाभाविक ही हम खोजों और नई अंतर्दृष्टि की एक अनंत निरंतर धारा हमेशा नहीं रख सकते। ऐसे दौर होंगे, जैसे कि हम अभी कण भौतिकी (पार्टिकल फ़िज़िक्स) में देखते हैं, जहां चीजें ठहरी हुई लगती हैं। उदाहरण के लिए, मैंने अभी सर्न से समाचार देखा कि लार्ज हैड्रॉन कोलाइडर में, उन्होंने नए चैनलों में चार्ज पैरिटी समरूपता की अनुपस्थिति का पता लगाया है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण खोज है, लेकिन यह धरती को हिला देने वाली खोज नहीं है। अभी हम ऐसे दौर में हैं जहां मेरे क्षेत्र के वैज्ञानिक कई छोटी-छोटी खोजें करते हैं, जो अपने आप में बहुत ही सुखद हैं क्योंकि वे हमारी समझ को और अधिक पूर्ण बनाती हैं। लेकिन मौलिक खोजें भी होंगी जो, फिर से, जो कुछ हो रहा है उसके बारे में हमारे विचारों को बदल देंगी।

अन्य क्षेत्रों में बहुत कुछ हुआ, जैसे कि सांख्यिकीय भौतिकी और विज्ञान की अन्य मौलिक शाखाओं में। खगोलविदों के पास हर समय अपने महान क्षण होते हैं, और आप यह नहीं कह सकते कि कोई भी क्षण नीरस होता है! वे ब्रह्मांड में अनेक नई चीजों की खोज कर रहे हैं क्योंकि उनकी दूरबीनें बड़ी और अधिक सटीक होती जा रही हैं। आप बायोफिज़िक्स या चिकित्सा के बारे में भी यही बात कह सकते हैं, जहां लगभग हर रोज खोज होती है।

लेकिन मेरे क्षेत्र में, आप सही कह रहे हैं, ऐसा लगता है कि कुछ भी

अभी हम ऐसे दौर में हैं जहां मेरे क्षेत्र के वैज्ञानिक कई छोटी-छोटी खोजें करते हैं, जो अपने आप में बहुत ही सुखद हैं क्योंकि वे हमारी समझ को और अधिक पूर्ण बनाती हैं। लेकिन मौलिक खोजें भी होंगी जो, फिर से, जो कुछ हो रहा है उसके बारे में हमारे विचारों को बदल देंगी।

नहीं हो रहा है। हालांकि, चीजें हो रही हैं, बस मामूली पैमाने पर अधिक हो रही हैं।

प्रश्न: तो क्या आप आशावादी हैं कि यह स्थिति बदलेगी, और हम बड़े कण भौतिकी खोजों में पुनरुत्थान देखेंगे?

उत्तर: विज्ञान का इतिहास बताता है कि ऐसी स्थिति में, प्रगति बस अलग-अलग दिशाओं में होगी। कोई न केवल सटीकता में सुधार के बारे में सोच सकता है, बल्कि ब्रह्मांड विज्ञान और ब्लैक होल भौतिकी जैसे खोज के बिल्कुल अलग रास्तों के बारे में भी सोच सकता है। अभी कुछ भी नया न आने का असली कारण है कि हर कोई एक ही तरह से सोच रहा है!

मैं इस बारे में थोड़ा हैरान और निराश हूं। बहुत से लोग एक ही तरह से सोचते रहते हैंऔर जिस तरह से वे नए सिद्धांत पेश करने की कोशिश करते हैं, वह उतना कारगर नहीं लगता। हमारे पास क्वांटम गुरुत्वाकर्षण, सांख्यिकीय भौतिकी, ब्रह्मांड और ब्रह्मांड विज्ञान के बारे में बहुत सारे नए सिद्धांत हैं, लेकिन वे अपनी मूल संरचना में वास्तव में नये नहीं हैं। ऐसा लगता है कि लोग वे साहसी नये कदम नहीं उठाना चाहते हैं, जो मुझे लगता है कि वास्तव में आवश्यक हैं। हमें अलग तरीके से सोचना शुरू करना होगा।

प्रश्न- क्या आप उदाहरण दे सकते हैं जिसका आप उल्लेख कर रहे हैं?

उत्तर: ज़रूर। भौतिकी के बारे में, भौतिकी से संबंधित अन्य विषयों के बारे में मेरा सोचने का तरीका यह है कि सब कुछ बहुत ज़्यादा तार्किक, बहुत ज़्यादा प्रत्यक्ष, बहुत ज़्यादा जमीन से जुड़ा हुआ होना चाहिए। क्वांटम यांत्रिकी पर शोधपत्र लिखने वाले बहुत से लोग इसके बारे में रहस्यवाद की भावना रखना पसंद करते हैं। मुझे लगता है कि यह पूरी तरह से गलत है। क्वांटम यांत्रिकी एक गणितीय पद्धति पर आधारित है जिसका उपयोग बहुत ही सामान्य भौतिक प्रभावों का वर्णन करने के लिए किया जाता है। मुझे लगता है कि भौतिक दुनिया अपने आप में एक बहुत ही साधारण दुनिया है जो पूरी तरह से शास्त्रीय है। लेकिन इस पूरी तरह से शास्त्रीय दुनिया में, अभी भी बहुत सी ऐसी चीजें हैं जो हम आज नहीं जानते हैं। ऐसे चरण हैं जिन्हें हम मूल रूप से गहरी समझ के अपने मार्ग पर खो रहे हैं।

प्रश्न: किस प्रकार के चरण?

उत्तर: मैं उन चरणों के बारे में बात कर रहा हूं जो इस तथ्य का फायदा उठाएंगे कि पूरी दुनिया बहुत सरल और सीधी है। समस्या यह है कि दुनिया अभी भी हमें जटिल लगती है, यही वजह है कि हम इस स्थिति में हैं।

प्रश्न: क्या आपको वाकई लगता है कि समस्या यह है कि हम सही सवाल नहीं पूछ रहे हैं, या इसके बजाय कि हम सही सवाल पूछ रहे हैं, और उनके जवाब,

हमारी उम्मीदों के विपरीत, हमारी पहुंच पहुंच से परे हैं?

उत्तर: आपने अभी जो कहा, कि ये प्रश्न हमारी पहुंच से बाहर हैं, ठीक वही लोगों ने एक दशक, एक सदी और एक सहस्राब्दी पहले कहा था। और निश्चित रूप से, हर बार यही गलत उत्तर था। हम इन प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं, लेकिन ऐसा करने के लिए बहुत सारे विज्ञान की आवश्यकता होती है। यह बिल्कुल सही नहीं है कि आप ऐसे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकते। आप दे सकते हैं, लेकिन आपको शुरुआत से शुरू करना होगा, जैसा कि मैंने क्वांटम यांत्रिकी के बारे में कहा था। यदि आप शुरू से ही मानते हैं कि क्वांटम यांत्रिकी एक सिद्धांत है जो आपको केवल सांख्यिकीय उत्तर देता है और उससे बेहतर कुछ नहीं देता है, तो मुझे लगता है कि आप गलत रास्ते पर। विज्ञान में हमेशा मेरा यही संदेश रहा है: किसी चीज को समझने से पहले, बस कुछ कदम पीछे जाएं। शायद आपको बहुत पीछे जाना पड़े, वापस शुरुआत तक ।

सही सवाल नहीं पूछने से चीजें अधिक से अधिक जटिल लगती हैं - अधिक से अधिक क्वांटम-मैकेनिकल - जबकि, वास्तव में, इसकी उस तरह से व्याख्या नहीं की जानी चाहिए। मेरा मानना है कि हम वास्तव में सफलता क्यों नहीं पाते क्योंकि हम चीजों के बारे में अलग तरीके से नहीं सोचते।

प्रश्न: ऐसा लगता है कि आप कह रहे हैं कि हमें एक घड़ी की तरह चलने वाले ब्रह्मांड में रहना चाहिए, तो मुझे आश्चर्य है कि आप इसका सबसे रहस्यमय पहलू किसे कहेंगे।

उत्तर: वैसे, अब भी कई रहस्य हैं जो हमारी समस्या को बहुत, बहुत कठिन बनाते हैं। जिस नियतिवादी ब्रह्मांड पर हम चर्चा कर रहे हैं, वह कुछ ऐसा है जिसे केवल मुझसे कहीं अधिक बड़े दिमाग, बहुत बड़े मस्तिष्क वाले व्यक्ति द्वारा ही पूरी तरह से समझा जा सकता है क्योंकि उन्हें सभी संभावनाओं पर विचार करना होगा। जैसे ही आप कोई गलत धारणा बनाते हैं, तो आपको फिर से यह क्वांटम-मैकेनिकल स्थिति मिलती है जिसमें चीजें एक-दूसरे पर आरोपित हो जाती हैं। एक सरल सवाल है कि क्या आप बिना किसी सुपरपोजिशन सिद्धांत के क्वांटम यांत्रिकी तैयार कर सकते हैं? और मेरा उत्तर हां है।

प्रश्न: आप अपने वैज्ञानिक योगदानों के सांस्कृतिक प्रभावों के बारे में कैसा महसूस करते हैं?

उत्तर: कुछ लोग बेकार ही सरपट भाग रहे हैं। मुझे लगता है कि आपको प्रकृति के नियमों को सख्ती से आवश्यक से अधिक जटिल शब्दों में नहीं कहना चाहिए। जितना संभव हो उसे उतना सरल बनाना चाहिए लेकिन वास्तविकता से परे नहीं, सच्चाई से परे नहीं। हमें अलौकिक न होने की कोशिश करनी चाहिए; अगर हम, वैज्ञानिकों के रूप में, अपने पीछे केवल रहस्यों का जाल छोड़ते हैं, तो हम सही काम नहीं कर रहे हैं।

मैं चाहता हूं कि लोग सुपर तर्कसंगत बनने की कोशिश करें। मेरे लिए, क्वांटम यांत्रिकी भी पहले से ही तर्क से बहुत दूर है। हमें विज्ञान पर कहर बरपाने वाली सार्वजनिक ग़लतफ़हमियों से बचने के लिए चीज़ों को ज़्यादा सटीक ढंग से कहने की कोशिश करनी होगी।❑

गांधी और टोपी

महात्मा गांधी से एक मारवाड़ी सेठ भेंट के लिए आये। वह बड़ी-सी पगड़ी बांधे थे और मारवाड़ी वेशभूषा में थे। बात-चीत के बीच उन्होंने पूछा- गांधीजी, आपके नाम पर लोग देश भर में गांधी टोपी पहनते हैं और आप इसका इस्तेमाल नहीं करते, ऐसा क्यों?

गांधीजी मुस्कराते हुये बोले- आपका कहना बिल्कुल ठीक है, पर आप अपनी पगड़ी को उतारकर तो देखिये। इसमें कम से कम बीस टोपियां बन सकती हैं। जब बीस टोपियों के बराबर कपड़ा आप जैसे धनी व्यक्ति अपनी पगड़ी में लगा सकते हैं तो बेचारे उन्नीस आदमियों को नंगे सिर रहना ही पड़ेगा। उन्हीं उन्नीस आदमियों में मैं भी एक हूँ। गांधीजी का उत्तर सुनकर सेठजी को कुछ कहते न बना। वह चुप हो गये। पर गांधीजी ने अपनी बात को जारी रखते हुये कहा- अपव्यय संचय की वृति अन्य व्यक्तियों को अपने हिस्से से वंचित कर देती है तो मेरे जैसे अनेक व्यक्तियों को टोपी से वंचित रहकर उस संचय की पूर्ति करनी पड़ती है।

डॉ. जलालुद्दीन का जाना

एक सम्मानित शिक्षाविद्, प्रोफेसर ए.के. जलालुद्दीन, जिनका शिक्षा और सामाजिक उत्थान के प्रति आजीवन समर्पण रहा का पिछले दिनों दिल्ली में निधन हो गया। प्रोफेसर जलालुद्दीन का जाना एक युग के अंत का प्रतीक है। शिक्षा के क्षेत्र में लगी स्वयंसेवी संस्थाओं को उनकी कमी गहराई से महसूस होती रहेगी। वे लंबे समय तक राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के कार्यक्रमों से जुड़े रहे तथा पिछले दो दशकों से 'बोध' के अध्यक्ष के रूप में सक्रिय रूप से मार्गदर्शन करते रहे वहां कईं नवाचार किये।

प्रोफेसर जलालुद्दीन ने अपने छह दशक लंबे कार्यकाल में देश की शिक्षा प्रणाली के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निबाही जिसमें प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में साक्षरता कार्यक्रमों को आकार देने उनका महत्वपूर्ण काम रहा, विशेष रूप से राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में। 1978 में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के राष्ट्रीय समन्वयक के रूप में देश में साक्षरता और सतत शिक्षा कार्यक्रम को पुनर्जीवित करने में मुख्य भूमिका निभाई।

उन्होंने सन् 1952 में कलकत्ता विश्व विद्यालय से अप्लाइड फिज़िक्स में पीएचड़ी और 1966 में मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी से मोलीकूलर फिज़िक्स में एक और पीएचडी की थी।

वर्ष 1972 में बांग्लादेश की मुक्ति के तुरंत बाद बनी बांग्लादेश सरकार को शैक्षणिक और तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने उन्हें भेजा।

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के प्रतिपादन हेतु शोध आधारित परिपेक्ष्य पत्र तैयार करने के लिए भी नियुक्त किया।

उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार पर 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा' के संशोधन की प्रक्रिया का मार्गदर्शन किया। डॉ. जलालुद्दीन को भारत सरकार द्वारा संचालित 'कंप्यूटर लिट्रेसी एण्ड स्टडीज़ इन स्कूल प्रोजेक्ट (1984–1989)' का राष्ट्रीय समन्वयक भी नियुक्त किया गया।

वर्ष 1989 में एनसीईआरटी के निदेशक पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद डॉ. जलालुद्दीन को दिल्ली विश्व विद्यालय ने प्रोफेसर ऑफ एजुकेशन और नव–स्थापित 'मौलाना आज़ाद सेंटर फॉर एलीमेंटरी एण्ड सोशल एजुकेशन' के प्रमुख के रूप में आमंत्रित किया। उन्होंने विश्वविद्यालय के 'बैचलर ऑफ एलीमेंट्री एजुकेशन कोर्स' तैयार करने में मदद की। एक शिक्षा शोधकर्ता और सामुदायिक संगठनकर्ता के रूप में, कईं भारतीय राज्यों और एशिया व अफ्रीका के कईं देशों में शैक्षिक प्रशासन और तकनीकी सहायता संस्थानों की क्षमता विकास की पहलों की सहायता के लिए उन्होंने यूनिसेफ/ यूनेस्को/ यूएनडीपी और विश्व बैंक की ओर से वरिष्ठ सलाहकार और टीम लीडर के रूप में मुख्य भूमिका निभाई और इन देशों में स्कूल सुधार कार्यक्रमों को शुरू करने में सहयोग किया।

डॉ. जलालुद्दीन नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशन प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन के प्रोफेसर एमीरेटस थे। शिक्षा में उनके योगदान के लिए रवींद्र भारती विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें मानद डीलिट उपाधि प्रदान की गई।

पोप फ्रांसिस का निधन

कैथोलिक चर्च के पहले लैटिन अमेरिकी पोप फ्रांसिस का 21 अप्रैल को निधन हो गया। वे 88 वर्ष के थे। फ्रांसिस ने 12 वर्षों तक पोप के रूप में कार्य किया।

पोप बनने से पहले, वे ब्यूनस आयर्स के आर्कबिशप जॉर्ज मारियो बर्गोग्लियो थे, और वे अमेरिका से पोप के पद पर चुने जाने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने 13वीं शताब्दी के रहस्यवादी सेंट फ्रांसिस ऑफ असीसी जिनके प्रकृति और गरीबों के प्रति प्रेम ने कैथोलिक और गैर–कैथोलिक दोनों को समान रूप से प्रेरित किया का नाम पॉप के रूप में अपना नाम चुनने वाले भी वे पहले पोप थे।

पोप फ्रांसिस ने अन्य पोपों से जुड़े लाल जूते या रेशमी वस्त्र जैसे विस्तृत कपड़े पहनने का विकल्प नहीं चुना। वे पोप के पद में जो बदलाव लाए, वे सतही नहीं थे। उन्होंने चर्च को बाहरी दुनिया के लिए ऐसे तरीके से खोला, जैसा उनके पूर्ववर्तियों में से किसी ने पहले नहीं किया था। व्यक्तिगत रूप से वे गरीबों के मददगार थे। उन्होंने वेटिकन प्लाजा को बेघर लोगों के लिए शरणस्थल में बदल दिया, जिन्हें उन्होंने सड़क के कुलीन लोग कहा।

उन्होंने ईस्टर से पहले गुरुवार को पारंपरिक पैर धोने की रस्म के दौरान प्रवासियों और कैदियों के पैर धोए। पोप के लिए एक अभूतपूर्व कार्य में, उन्होंने गैर–ईसाइयों के पैर भी धोए।

हालांकि उन्होंने चर्च की इस स्थिति को बनाए रखा कि सभी पादरी पुरुष होने चाहिए, उन्होंने ऐसे दूरगामी परिवर्तन भी किए जिससे महिलाओं के लिए विभिन्न नेतृत्व की भूमिकाएं खुल गईं। फ्रांसिस वेटिकन में प्रशासनिक कार्यालय का नेतृत्व करने के लिए एक महिला को नियुक्त करने वाले पहले पोप थे। साथ ही पहली बार, महिलाओं को 70–सदस्यीय निकाय में शामिल किया गया जो बिशपों का चयन करता है और 15–सदस्यीय परिषद जो वेटिकन के वित्त की देखरेख करती है में भी महिलाओं को शामिल किया। उन्होंने एक इतालवी नन, सिस्टर राफैला पेट्रिनी को वेटिकन सिटी का प्रमुख नियुक्त किया।

शिक्षाविद् मोहियुद्दीन नहीं रहे

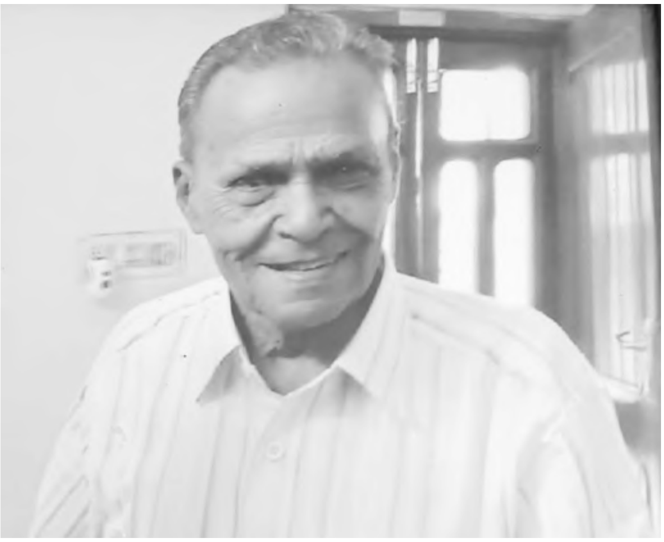

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के सदस्य मोहियुद्दीन जी का भीलवाड़ा में पिछले दिनों निधन हो गया। कालेज शिक्षा के प्राध्यापक के रूप में उन्होंने बहुत काम किया और ख्याति पायी। प्रिंसीपल के पद से सेवानिवृति के पश्चात मोहियुद्दीन जी समाजिक कामों में लग गये।

वे शिक्षाविद अनिल बोर्डिया के नेतृत्व वाली राजस्थान की महत्वपूर्ण लोकजुम्बिश परियोजना के साथ भी सक्रिय रूप से जुड़े रहे।

वे बहुत ही सरल ,सहज और शांत स्वभाव के मिलनसार इंसान थे और सभी के साथ बहुत अपनापन रखते थे।

मोहियुद्दीन जी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के प्रारम्भिक काल से ही जुड़ गये थे। वे वर्षो तक समिति की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। समिति में हुई एक शोक सभा में उनके निधन पर विनम्र शध्दांजलि अर्पित की गई। समिति की अध्यक्ष आशा बोथरा ने जोधपुर से अपने संदेशे में कहा कि साक्षरता कार्यक्रमों को गावों में सफलतापूर्वक लागू करने में मोहियुद्दीन जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

RS-CIT
एक परिपूर्ण कंप्यूटर कोर्स !

RS-CIT एक विस्तृत बेसिक कंप्यूटर कोर्स है जिसकी मदद से कंप्यूटर के आवश्य कौशल सीख कर कंप्यूटर पर कार्य करने में दक्षता हासिल की जा सकती है एवं विभिन्न डिजिटल सुविधाओं के उपयोग के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है

RS-CIT कंप्यूटर कोर्स ही क्यों ?

ई-लर्निंग पर आधारित, ऑडियो-विडियो कंटेंट तथा चरणबद्ध असेसमेंट
राज्य सरकार की विभिन्न सरकारी नौकरियों में एक पात्रता ।
शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 6500 ज्ञान केंद्र ।
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा द्वारा परीक्षा एवं प्रमाण पत्र ।

अन्य कोर्सेज
- Financial Accounting
- Spoken English & Personality Development
- Desktop Publishing
- Digital Marketing
- Advanced Excel
- Cyber Security
- Business Correspondence

Rajasthan Knowledge Corporation Limited
(A Public Limited Company Promoted by Govt. of Rajasthan)

नजदीकी ज्ञान केंद्र के लिए www.rkcl.in पर विजिट करें
या 9571237334 पर WhatsApp करें

स्वत्त्वाधिकारी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा क्लासीफाइड प्रिण्टर्स, जयपुर में मुद्रित तथा 7-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर-302004 से प्रकाशित। संपादक- राजेन्द्र बोड़ा

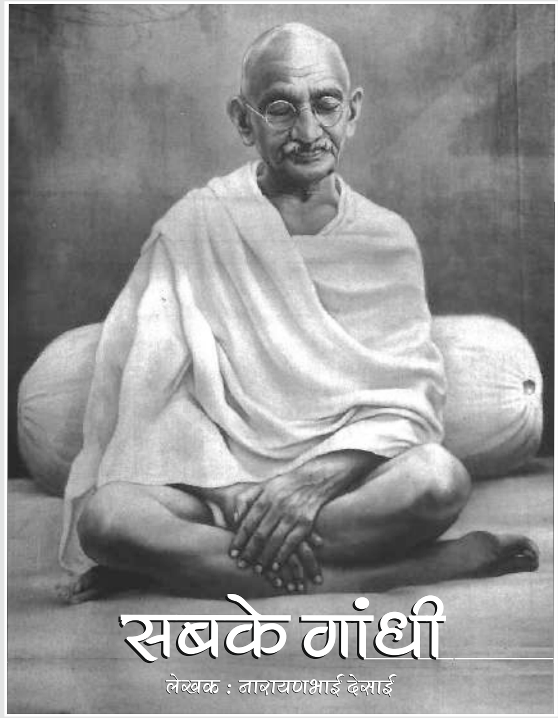

सबके गांधी

सहयोग राशि के लिए बैंक विवरण

BANK OF BARODA
Rajasthan Adult Education Association
Branch Name : IDS Ext. Jhalana Jaipur
I.F.S.C. Code : BARB0EXTNEH (Fifth Character is zero)
Micr Code : 302012030
Acct.No. : 98150100002077

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004

12 पुस्तकों के एक सैट की सहयोग राशि रुपये 500/– मात्र डाक खर्च अलग से देय होगा।